सुजाता

(मैथिली उपन्यास)

नंद कुमार मिश्र

सुजाता

(मैथिली उपन्यास)

■ नंद कुमार मिश्र

✱प्रकाशक : श्रीमती अमल देवी,
भीखनपुर, भागलपुर।
रंजना झा बोल्हवार
मधुबनी
सर्वाधिकार सुरक्षित
✱सहयोग राशिः -चालीस टका मात्र।

✱मुद्रक : आशा प्रिंटींग प्रेस तिलकामाझी, भागलपुर।

समर्पण

पूज्यवर

श्री अमरेश चन्द्र मिश्र

कें चरण कमल मे

सादर

समर्पित

लेखकीय....

ओना तँ ई कथा सत्य घटना पर आधारित अछि, मुदा एहिमे पात्र आ स्थान काल्पनिक अछि। समाजमे लोक नारीकेँ भोगक वस्तु बुझैत अछि। ओ ई बिसरि जाइत अछि जे नारी जँ ककरहुँ पत्नी अछि तँ ककरहु माय आ बहिन सेहो अछि। कोनो सरकारी कार्यालय मे बिधवाक नियुक्ति वा ओकर क्षतिपूर्ति वा अन्य भुगतानक लेल ओकरा कतेक पापर बेलए पड़ैत छैक, ओ तँ केओ भुक्तभोगीये उल्लेख कऽ सकैत अछि। अधिकारी सँ यूनियन केर नेतधरि ओकरा पर अपन गीध दृष्टि टिकौने रहैत अछि। यूनियन जकरा लेल कर्मचारी जान तक दऽ दैत अछि, मुदा ओ की जनैत अछि जे ओकरा बाद ओएह यूनियन के नेता ओकरा बौह-बेटी के बेआबरू करत, भोगक वस्तु बुझत। आ सेहो अधिकारी सँ मिलिकए।

एहि उपन्यासक नायिका एहने एक विधवा छथि, जिनकर नाम थिकैन ''सुजाता''। सुजाता एहि अन्यायक विरूद्ध लड़ैत छथि मुदा युक्तिक संग। सब अधिकारी एके रंगक नञि होइत छथि। सुजाता केँ सेहो एकटा इमानदार अधिकारी भेटि जाइत छथिन्ह। जे हिनकर पूर्ण सहयोग करैत छथि आ अपना बेटी जकाँ सेहो मानैत छथिन्ह। सुजाताक सूझ-बूझ पर हुनकहु आश्चर्य होइत छन्हि। ओहि अधिकारीक मदति सँ सुजाता बिना किछु गमौने नौकरी पाबैत छथि आ अन्य लोककेँ सेहो नौकरी दिआवैत छथि। संगहि व्याभिचारक चक्रव्यूह के सेहो तोड़बामे सफल होइत छथि।

आइ हमरा समाजमे आवश्यकता अछि, सुजाता सनक नारीक ,जे समाजक कुरीति, भ्रष्टाचार आदिक संग संघर्ष कऽ सकए, लड़ि सकए, ओकर प्रतिकार कए सकए आ अन्य नारीकेँ अपन उचित स्थान दिआ सकए।

■ नंद कुमार मिश्र

भूमिका

'विधात्रीक' कवि आ "गाम-घर"क कथाकार श्री नन्दकुमार मिश्रजीक 'सुजाता' उपन्यास पढ़ि आह्लादित भेलहुँ। वस्तुतः नारी-विमर्श पर आधारित ई उपन्यास संघर्ष गाथा थिक। अवलाक करुण क्रन्दन उपन्यासक भाव-भूमि बनैत अछि, मुदा ई क्रन्दन भावनाक अतिरेकमे दिशाहीन नहि होइत अछि, अपन बाट तकैत दुराचारीक जाल कें भेदन करबा मे सफल भेल अछि। उपन्यासमे नारीकें ' भोग्या' अथवा 'पूज्या' धरि सीमित नहि कयल गेल अछि, प्रत्युत, सुजाता आ सुनीता कें तीक्ष्ण मेधासँ सम्पन्न बुद्धिमती नारीक रूपमे चक्रव्यूह कें बेधैत देखाओल गेल अछि। नारीक ई मानवी रूप उपन्यासक उत्कर्ष थिक!

परम्परागत मानदण्डक आधार पर एहि उपन्यास विश्लेषण करब उचित नहि बूझि पड़ैत अछि कारण उपन्यासमे सहज भावसँ कथा कहल गेल अछि। 'सुजाता' उपन्यासक नाट्य रूपान्तर होयबाक चाही, गाम-गाममे आ शहर-शहर मे मंचन होयबाक चाही। हमरा जनैत दृश्य काव्यक रूपमे ई उपन्यास अधिक प्रभाव उत्पन्न करबा मे समर्थ होयत।

07.01.2006 डा॰ अमरनाथ
दर्शनशास्त्र-विभाग
ल॰ ना॰ मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

फागुन मास बित रहल छल। मन्द - मन्द पुरबा बसात सिहकि वसन्तक आगमन सँ अवगत करा रहल छल। आमक मंञ्जरक मंद-मंद सुगंध सँ वातावरण रसमय लागि रहल छल। कोयल केर कुहू-कुहू क आवाज अत्यन्त मनमोहक छल। मकरंद एक फूल सँ दोसर फूल पर जाय पराग एकत्र कए रहल छल। एक दिस प्रकृति देवी वसन्तक स्वागत कए रहल छली आ दोसर दिस रमाकान्तक ओहिठाम (सेहो प्रतीक्षा छल किनकहु आगमन केर आ ओ) प्रतीक्षा छल एक नवजात शिशुक आगमन केर। जकरा लेल रमाकान्तक ओहिठाम भोरहि सँ बड़ चहल-पहल छल। केओ एम्हर-ओम्हर दौड़ि रहल छल, तँ केओ डगरिन के बजाबए गेल। सब केओ कोनो ने कोनो काज में व्यस्त छल। किछु क्षणक बाद बच्चाक कनबाक आवाज भेल आ इहो सुनबा में आयल जे बालक केर जन्म भेल अछि। ई सुनि सब केओ प्रमुदित भेलाह। आँगन सँ सेहो स्त्रीगणक हर्ष-ध्वनि दलान पर आबि रहल छल। ओहि हर्ष आ उल्लासक बीच वसन्तक शोभा द्विगुणित भऽ उठल।

रमाकान्त एक मध्यम वर्गीय सुभ्यस्त परिवारक मुखिया छथि। ओना तँ हिनकर घर देहात में छन्हि मुदा शहर सँ करीब दू किलोमीटरक दूरी रहलाक करणे परिवेश आ रहन-सहन शहरीये छन्हि। जिबिकाक साधन अपन खेती बारी छन्हि रमाकान्त के चारिटा पुत्र पहिने सँ छलन्हि। आई पाँचम पुत्रक जन्म भेल छन्हि। मध्यम वर्गीय परिवार में पुत्रक जन्म शुभ

मानल जाइत अछि। पुत्रक विवाह में दहेजक रूप में नीक टाका आ सामग्री भेटत, इ अवधारणा बनि गेल अछि। ते आई रमाकान्त अपना मोद मंडलीक संग मस्त छथि। चाटुकार मित्र अपना-अपना ढंग सँ रमाकान्तक बड़प्पन में खूब शेखी बघारि रहल छलाह। ओहि मोद मंडलीक एक सदस्य छलाह लुत्ती झा। जेहने नाम लुत्ती झा, तेहने चाटुकार आ लुत्ती लगएबा में सिद्धहस्त। लुत्ती झाक लुत्ती सँ पुरा इलाका थरथराइत छल। पीठक पाछाँ लोक बहुत किंछु बजैत छल मुदा सोझाँ मे केओ साहस नञि क पवैत छल। लुत्ती झा अपन लुत्ती छोड़ैत बजलाह- रमाकान्त बाबू, अहाँक घर में तँ खाली बलेंके चेक आबि रहल अछि। तैयो अहाँक गठरी फूजि नञि रहल अछि। सब दिनक किरपिने रहि गेलहु। अरे आबहु तँ उदारता सँ खरचा-बरचा करु। रमाकान्त हसैत बजलाह - हौ लुत्ती झा साओनक आन्हर के सब तरि हरियरीये सुझैत अछि। ब्लेक चेक तँ अवश्य अछि मुदा जखन भजत, तखन ने। एखन तँ देखि रहल छह जे चारि-चारि टा विद्यार्थी के लौज मे राखि पढ़ा रहल छियैक। हालत खराव अछि। कोना क जोगार पाती क रहल छी से हमही जनैत छी। आई-काल्हि विद्यार्थी के पढ़ाएब आ हाथीक चारा जुटाएब दूनू बराबरि अछि।आ तोरा की छहु "आगु नाथ ने पाछु पगहा, बिना छान केर कूदै गदहा" तो की बुझवह-"बाँझ की जानए प्रसव के पीड़ा"। दू बेकतीक पेट छह सैह ने। अपन पेट तँ कौओ-कुकुर पोसि लैत अछि। जबाब सुनि लुत्ती झा तिलमिला उठलाह। कारण जबाब बड़ समीचीन छल आ एकर आशा लुत्ती आ के नञि छलनि। दूनू आदमी मे एहि तरहक

उठा-पटक तँ होइतहि रहैत छल मुदा आजुक आक्रमण बड़ पैघ छल। लुत्तीझा आखिर लुत्तीझा छलाह, चुप कोना रहितथि। जँ चुप रहि जइतथि तँ, हुनका नामक सार्थकते नञि रहि जाइत, पुनः बजलाह-औ रमाकान्त बाबू जकरा हाथी छैक ओएह ने चाराक इन्तजाम करत। चारा जुटाएब कठिनाह तँ अवश्य छैक, मुदा हाथीओ बला तँ ओएह ने कहबैत अछि। तावत् आंगन सँ चाह-पान आयल आ सब केओ चाह पिबैत पान खाइत अपना-अपना घरक बाट धैलन्हि।

नव शिशुक नाम पंकज राखल गेल। पंकज के पालन-पोषण नीक जकाँ भेल/कारण घर में सब सँ छोट नेना तँ ओएह छल आ तें सबकेर विशेष स्नेह पंकज पर छल। धीरे - धीरे पंकज पैघ होमए लगलाह। ओ बचपनहि सँ बड़ मेछावी छलाह। परिवार मे सेहो पढ़ाई-लिखाईक लेल उपयुक्त वातावरण छल। हुनका सँ पैघ भाय सब हाई स्कूल आ कालेज में पढ़ैत छलथिन्ह। पाँच वर्षक वाद पंकज केर नाम स्कूल मे लिखाओल गेल। वर्ग मे सब साल प्रथम आवथि आ तें शिक्षक सेहो बहुत मानैत छलथिन्ह आ घरक लोक तँ सहजहि। मिलाजुला कए पंकज सबहक प्रियपात्र छलाह। 20 वर्षक अवस्था मे पंकज बी0 ए0 प्रथम श्रेणी सँ पास केलन्हि। देखबा-सुनबा में अत्यन्त सुन्नर छलाह। कद-काठी सेहो नीक छलन्हि। रंग श्यामल मुदा मुँहक पानि बड़ दमकैत छल। हू-बहू मायक स्वरूप पाओने छलाह। आँखि पैघ-पैघ आ ललाट पर सिंदुरक ठोप हुनक सुन्नरता कें आर निखारि रहल छल। स्वभाव सँ चंचल आ

गप्प-शप्प मे अत्यन्त रसिक-बुझू पिताक संस्कार पओने छलाह। पंकज केर विवाहक प्रंसग लऽ क कतेक घटक लोकनि आबैत छलाह मुदा हुनकर इच्छा नौकरी भेटलाक बादे विवाह करबाक छल तें एहि प्रसंग पर रमाकान्त किनकहु सँ कोनहु गप्प-शप्प नञि करैत छलाह। पंकज नौकरीक लेल कतेक ठाम फार्म भरने आ साक्षातकार देने छलाह। पंकज के अपनहि मधेपुर शहर मे सरकारी विभाग मे नौकरी भेटि गेलन्हि आ दरमाहा करीब सात हजार रूपया महीना छलन्हि। आव तँ रमाकान्त सेहो अत्यन्त खुश छलाह। सरकारी नौकरी बला वर के तिलक नीक भेटैत अछि। नौकरी शुरू करितहि पंकज केर विवाहक लेल घट्टकक आयब-जायब शुरू भऽ गेल आ लुत्ती झाक अगुआई मे मोल-जोल होमए लागल। कनियाँक फोटो आ परिचय केर अम्बार लागि गेल मुदा कोनो फोटो पसिन्न पड़ैत छल तँ परिवार नञि आ परिवार पसिन्न छल तँ फोटो नञि। मिला जुला कए कान तँ सोन नञि आ आ सोन तँ कान नञि। हँ ! एकटाबात अवश्य देखल जे एहि प्रकरण में लुत्ती झाक भाव आकाश छूने छल। लुत्ती झाक गप्प-शप्प आ व्यस्तता सँ बुझना जाइत छल जे पंकज रमाकान्तक नहि, लुत्तीये झाक बेटा होथि। लुत्ती झा छलाहो तँ रमाकान्तक अभिन्न मित्र आ घरक लोक कें सेहो दूनू मित्रक व्यवहार मे कोनो फर्क नञि बुझाइत छल।

(2)

उमाकान्तक ओहिठाम एकटा कन्या जन्म लेलनि। जकर

नाम राखल गेल सुजाता। ओना तँ गरीबक लेल कन्याक जन्म अभिशाप मानल जाइत अछि, मुदा एकटा बच्चाक अभाव सँ उमाकान्तक घर-आंगन सून लगैत छल। विवाहक पन्द्रह साल बिति गेल छल। कतेक कबुला-पातीक बाद एहि कन्याक जन्म-भेल। आब निः सन्तान तँ नञि कहौताह, तें हुनकर परिवार बड़ आनन्दित छल आ एहि कन्या के भगवानक उपहार बुझि प्रसन्न छल।

उमाकान्त साधारण किसान परिवारक मुखिया छथि। करीब दूअढ़ाई बीघा खेतक जोतनिहार छथि।

खेत बड़ चिक्कन छन्हि। ओहि सँ तीनू फसल उपजा लैत छथि आ नीक जकाँ गृहस्थीक गाड़ी घिचि रहल छथि। परिवार सेहो सिमित छन्हि, मात्र दू प्राणी आ सुजाता। सुजाताक पालन-पोषण में कोनहु कसरि नञि राखल गेल। सुजाता छलीहो तँ दूनू प्राणीक आँखिक तारा। पाँच बरषक बाद सुजाताक नाम गामेक स्कूल मे लिखाओल गेल। सुजाता पढ़बा-लिखबा में बड़ विलक्षण छलीह। शुरु-शुरू मे तँ सुजाता उमाकान्तक आँगुर पकड़ि स्कूल जाइत छलीह मुदा किछु दिनक बाद टोलक बच्चा राभक संग जाय लगलीह। सुजाता क्रमशः बचपन सँ किशोरावस्था मे पायर द रहल छलीह। जेहने नाम तेहने रूप-रंग आ गुण-शील। पढ़बा-लिखबा मे सेहो बड़ दिब छलीह । सतत अपना आचार-विचार सँ माय-बाबूजी के प्रसन्न राखैत छलीह। सुजाताक व्यवहार सँ टोल पड़ोसक लोक सेहो प्रसन्न

रहैत छल। सुजाता के एकटा पित्ती छलथिन्ह, नाम छलन्हि नवकान्त। नवकान्त बड़ हँसमुख लोक रहथि। ओ अपन बाक् पटुता सँ कानल लोक के हँसा दैत छलाह। नवकान्त बच्चहि सँ सुजाता के कोरा मे लऽ कऽ घुमाबैत-फिराबैत छलाह। जाहि दिन ओ सुजाता के नञि देखैत छलाह, भोजन नीक नञि लागैत छलन्हि। आब तँ सुजाता ओहि वयस मे नञि छलीह जे नवकान्त हुनका कोरा मे लऽ कऽ घुम बितथि मुदा कोनहु ने कोनहु बहाने आबि क सुजाताक हाथक चाह अवश्य पिवथि आ भाउज सँ हँसी-चौल मे बाजथि-भौजी फेर हमरहि आश होयत। सुजाता कतेक दिन, आइ ने काल्हि सुजाता तँ सासुर जएबे करतीह आ से सुनि सुजाता लाजे पड़ा जाइत छलीह।

पन्द्रह वर्षक वयस ने सुजाता प्रवेशिका परीक्षा पास भेलीह आ सेहो प्रथम श्रेणी सँ मुदा परिवारक गरीबी आ गामक अगल-बगल मे कालेज नञि रहलाक-कारणें सुजाता आगु नञि पढ़ि सकलीह। सुजाता के आगु पढ़बाक प्रबल इच्छा छल मुदा विवशता छल गरीबी। दोसर बेटी के उच्च शिक्षा देलाक बाद दहेजोक व्यवस्था ओही अनुरूप करए पड़त से सोचि उमाकान्त मटिया देलन्हि आ सुजाता के गृह कार्य मे लगा देलन्हि। सुजाता घरक काज मे सेहो निपुण छलीह। भानस-भात सँ लऽ क सिआई-कढ़ाई धरि सिखि गेल छलीह। घरक काज सँ जे समय बचैत छलन्हि तकर सदुपयोग सुजाता धार्मिक पोथीक पठन-पाठन आ माँ-बाबूजीक सेवा मे करैत छलीह। सुजाताक रंग-रूप देखि अड़ोस-पड़ोसक लोक चकित रहि जाइत छल।

जखन ओ साड़ी पहिरि बहराइत छलीह तँ बुझाइत छल जेना स्वर्ग सँ कोनहु अप्सरा धरती पर उतरल हो। कद-काठी आ अंग-प्रत्यंग सँ विद्यापतिक पदावलीक नायिका बुझाइत छलीह। चंचल स्वाभावक संगहि मृदुभाषी सेहो छलीह। बिना सिंगारो-पेटारक कामदेवक कामाग्नि सन दमकैत छलीह। जेना बुझाइत छल जे विधाता अपनहि हाथे निरमौने होथि। सुजाताक रूप देखि माँ, बाबूजी सेहो अनुरुप सुयोग्य वरक संग प्रणय सूत्र में बाँन्हक लेल चिन्तित रहए लगलाह। जखन कि उमाकान्तक आर्थिक स्थिति ओतेक नीक नञि छल आ सुजाताक अनुरूप वर मे तिलक अधिक लागत मुदा ओ दूनू प्राणी खेतो पथार बेचि सुजाता के नीक घर-वर करबाक मनसूबा राखैत छलाह। सुजाता के छोड़ि दोसर केओ छलो तँ नहि। जँ सुजाता के घर-वर नञि भेटत तँ खेत-पथार राखि कऽ की करब आ ककरा लेल राखब, सैह सोचैत छलाह। कौखन इहो चिन्ता होइत छलन्हि जे सुजाता के सासुर गेलाक बाद दूनू प्राणी कोनाक रहताह। फेर सोचथि जे बेटी तँ दोसरक धन होइतहि अछि। आई ने काल्हि ओ तँ दोसरक घर जएबे करत आ जँ नञि जायत तँ इहो कलंकेक गप्प होयत। इएह तँ बिधिक विधान सेहो अछि।

सुजाताक लेल वर तकबाक प्रयोजन सँ उमाकान्त कतेक ठाम गेलाह मुदा वर तँ घर नञि आ घर तँ वर नञि आ जाहिठाम दूनू अनुरूप बुझना जाइत छलन्हि तँ तिलकक भाव सुनि बेहोश भऽजाइत छलाह।

एक दिन उमाकान्त के भेंट एकटा आदर्शवादी बारागत सँ भेलन्हि। ओ घर-वर उमाकान्त के पसिन्न छलन्हि आ वरागत के सेहो सुजाता पसिन्न छलथिन्ह। उमाकान्त बजलाह-तखन गप्प के आगु बढ़ाओल जाय। बारागत बजलाह-देखू हम एकदम आदर्श कथा करए चाहैत छी। तिलक लऽक हम अपना खानदान में दाग नञि लगाएब। बरागत केर गप्प सुनि उमाकान्त गद्‌गद् भ गेलाह आ सोचए लगलाह जे एखनहु एहि धरती पर एहन लोक अछि। तावत वरागत पुनः बजलाह-मुदा आदर्शक मतलब इहो नञि भेल जे हम बरद बेचि वौआक विवाह कराएब। उमाकान्त बजलाह-से तँ सहजहि जँ अपने तिलक नञि लेब तँ घर सँ किएक खर्च करब। बरागत बजलाह-ते दूनू चुल्हा अहीं के जारए पड़त। हमरा घर मे कोनहु कनियाँ के सोहाग मे पचीस भरी सँ कम सोनक गहना नञि चढ़ल छैक, से व्यवस्था अपनहि के करए पड़त। टी0 वी0 फ्रीज आ मोटर साइकिल तँ आई-काल्हि हरहीओ सुरही दैत अछि आ ओकर उपभोग तँ अपनहि के बेटी जमाय करताह। वरियातीक लेल कम सँ कम दस टा मारूतीक व्यवस्था होएबाक चाही। एकावन टा बरियाती रहताह, हुनकर वर-विदाई सेहो नीक जकाँ होएबाक चाही। बरियातीक भोजन मे केवल शुद्ध घी केर व्यवहार होएबाक चाही। गाजा-बाजाक व्यवस्था जे अपने के रूचि हो, कए लेब। कारण हम अहाँ सँ कैंचा नञि लऽ रहल छी। हम अपना नेना के आदर्श विवाह करा रहल छियन्हि। वरियातीक स्वागत सतकार मे कोनो तरहक त्रुटि नञि होएबाक चाही एहि सँ दूनू गोटेक प्रतिष्ठा बढ़त आ जँ ओहि मे कमी करब तँ हम ककरहु मुँह

देखेबा जोगरक नञि रहब। ते एतेक आवश्यके अछि। ओकरा बाद आर जे किछु अपनेक इच्छा हो, क सकैत छी। ओकरा लेल कोनो मनाही नञि अछि। अपने जे किछु देवैन्ह से अपना बेटी-जमाय के देबैन्ह। ओहि सँ हमरा कोनो सरोकार नञि रहत। हम तँ मात्र अपन खानदानक प्रतिष्ठा जोगि रहल छी। हँ ! एकटा गप्प आर..... वौआक माय कहैत छथि जे पुरुष सब तँ बौआक विवाह देखबे करताह मुदा हम सब तँ नञि देखब, ते एखन जे एकटा नबका रिति चलल अछि, भी0 डी0 ओ0 ग्राफीक से अवश्य क लेब।

उमाकान्त सोचए लगलाह-एहन आदर्श कथा तँ घर-घरारी बेचलाक बादो नञि भऽ सकैत अछि। कतए आबि क फँसि गेलहु आ बजलाह-हम गाम पर सँ विचारिक दोसर दिन आबि रहल छी, आ पुनः दुबारा ओहिठाम नञि गेलाह।

(3)

पंकज केर विवाहक लेल घटक सभक दौड़ होमए लागल। रमाकान्तक ओहिठाम सदिखन भीड़ लगले रहैत छल। एक जाइत छल, दोसर अबैत छल। चाहक केटली चढ़ले रहैत छल आ पनबट्टी कौखन खाली नञि होइत छल। ओहि झुण्ड मे उमाकान्त सेहो छलाह। जखन कथाक सिलसिला मे उमाकान्त एम्हर-ओम्हर घुमि रहल छलाह, तँ एक दिन हुनक भेंट अनायास लुत्ती झा सँ भेल आ लुत्ती झा बजलाह -औ बगले मे तँ रमाकान्त बाबू छथि। हुनकर छोटका कंटिरबा पंकज बी0 ए0 पास कए

सरकारी नौकरी कए रहल अछि। ओहि सँ नीक कथा अहाँ के कतए भेटत। अहाँ हुनकहि सँ किएक ने भेंट करैत छी। एहि परोपट्टा मे ओहि सँ नीक कथा हमरा तँ नञि बुझा रहल अछि।

उमाकान्त बजलाह हँ! से तँ सत्ते कहैत छी, मुदा ओहेन नामी-गिरामी लोक, तिलकक माँग, की हम ओहि जोगरक छी। गप्प करबा सँ पहिने अपनहु औकाति तँ देखब। लुत्ती झा बजलाह-उमा बाबू! जतेक लोक कहैत छैक, ततेक भेटैत थोरहि छैक। बेटा बला तँ अकाश जेना मुँह फारने रहैत अछि। ओकरा तँ संतोषे नञि होइत छैक जे कतबा मांगल जाय कतबा नञि मुदा बीच मे हमरा लोकनि छी ने। रमाकान्त हमर परम मित्र छथि। हुनकर स्वभाव हम जनैत छी। तखन एकदमे ठुठ कए देबैक से तँ नञि होयत। कनेक-अपनहु के डाँड़ कसए पड़त आ जँ महादेवक कृपा होएतन्हि तँ कथा अवश्य-पटि जायत मुदा एक बातक ध्यान-राखब, ओहिठाम हमरा देखार नञि करब।

उमाकान्त लुत्ती झाक आग्रह पर रमाकान्त ओहिठाम गेलाह, ओहिठाम हिनकर खूब स्वागत सतकार भेल आ होइत किएक नञि, आयल लक्ष्मी कँ के ठोकराबैत अछि। सब सँ पहिने पायर धोआओल गेल। ओकर बाद शर्बत चलल। शर्बत खतम नञि भेल छल कि प्लेट मे साजि कए तीन चारि किसिम के मिठाई आबि गेल। उमाकान्त मिठाई खएबा सँ मना सेहो कएलन्हि मुदा रमाकान्त हाथ पकड़ि लेलथिन्ह, से कोना होएत। अपने जलखै नञि करब तँ हम अहाँ सँ कोनो गप्प नञि करब।

उमाकान्त विवश भ जलखै केलन्हि। पुनः चाह आ पान सेहो आबि गेल। उमाकान्त एहि आव-भगत सँ अत्यन्त प्रसन्न छलाह। कथाक प्रसंग के आगु बढ़ाओल गेल। सब सँ पहिने तीन चरिटा सुजाता के फोटो जे लाल रंगक लिफाफ मे छल, रमाकान्तक हाथ मे देलन्हि। सब केओ सुजाताक फोटो देखलन्हि। फेर ओहि फोटो के लिफाफ मे बन्द कए आँगन पठाओल गेल। आंगन मे पंकज केर माँ आ अन्य अड़ोस-पड़ोसक स्त्रीगण फोटो देखलन्हि। सब के सुजाता पसिन्न भेलथिन्ह। आंगन के फोटो राखि लेल गेल आ गप्प के आगु बढ़ेबाक सहमति आबि गेल। तखन रमाकान्त बजलाह की हौ लुत्ती झा! कथा तँ करबाक योग्य बुझना जाइत अछि, तखन तोरा लोकनिक विचार की छह।

लुत्तीझा बजलाह-फोटो मे तँ कन्या साक्षात लक्ष्मी सनक लागि रहल छथि आ उमाकान्त सेहो पड़ोसिये लोक छथि, कोनहु अनचिन्हार लोक वा घरक तँ छथि नञि। तें हमर तँ सोलहो आना विचार अछि, जे इ कथा होएबाक चाही। रमाकान्त बजलाह-लुत्ती बाबू तखन आगुक गप्प-शप्प कएल जाय। लुत्ती झा जेना पर्दा उठबाक बाट ताकैत छलाह, आदेश भेटितहि पढ़ायल सुग्गा जकाँ धारा प्रबाह अपन व्याख्यान शुरू कएलन्हि। पंकज के पढ़ेबा-लिखएबा मे लाखों टाका खर्च भेल अछि। बाजार मे तँ जेना आगि लागल छैक। सब चीज वस्तुक दाम आकाश छुने जाइत अछि आ सबटा काज तँ टके सँ होयत। फतेपुर सँ एकटा कन्यागत आयल छलाह ओ छः लाख टका

आ उपर सँ गाड़ी, फ्रीज, टी0 भी0 आदि द रहल छलाह मुदा दूरक दुआरे भौजी के पसिन्न नञि भेलन्हि। उमा बाबू तँ बगल के लोक छथि ते हिनका लेल पाँच लाख राखल गेल अछि। ओहि सँ कम मे कोनो गुञ्जाइस नञि भऽ सकैत अछि। वरक मोल सुनि उमाकान्तक तँ होशे उड़ि गेल। पैरक निचाँक जमीन ससरए लागल। पुनः लुत्ती झा क पूर्वक गप्प मोन पड़लन्हि आ संयमित होइत बजलाह-एतेक मे तँ हम नञि सकब। लुत्ती झा बजलाह-जखन सरकारी नौकरी बला वर ताकैत छी तखन तँ एहि सँ कम मे नञि होयत। आई-काल्हि तँ प्राइवेटो नौकरी बला वर के तीन-चारि लाख भेटैत अछि। सब सँ पहिने तँ उमा बाबू इ कहल जाउ जे अहाँ के घर आ वर पसिन्न अछि।

उमाकान्त बजलाह - हँ! हमरा घर आ वर खूब पसिन्न अछि। लुत्तीझा बजलाह-युग-जवाना तँ देखिये रहल छी। पंकज रमाकान्त बाबूक छोट नेना छथि। हिनका सँ पैघ चारिटा भाय केर विवाह-दान मे जे भेलैक अछि, ओहि सँ कम पंकज मे कोना हेतैक आ सबटा बचल-खुचल मनोरथो तँ अही मे पूरा करताह।

उमाकान्त बजलाह-हम तँ बेटीक बाप छी आ मनोरथ तँ हमरहु अछि। मुदा अपन ओकाति देखिये क ने काज करब। हम तँ इएह चाहब जे जतेक कम मे भऽ सकए से नीक।कन्या हम बड़ नीक द रहल छी। काल्हि इ नञि बुझायत जे कतए बेटाक विवाह कराओल अछि। लुत्तीझा बजलाह - से तँ उचित गप्प कहल अछि। कन्या अहाँक बड़ अपूर्व छथि आ ते अहाँ सँ

रमाकान्त बाबू गप्पो क रहल छथि। अपने सँ पहिने पचासो घटक आबि क आपस गेल छथि, से तँ अपनहु जनैत छी मुदा केवल कन्येक सुन्दरता सँ काज नञि चलैत अछि। बुझल अछि कि नञि, विवाह सँ बिधभारी आ बिध-बाध मे कतेक खर्च होइत अछि से तँ अपनहु के अंदाज होएबे करत। सबटा रमन-चमन तँ टके पर होइत अछि। तखन अपनहु किछु बाजल जाउ, खाली हमहीटा बाजैत रही से उचित नञि।

उमाकान्त बजलाह - लुत्ती बाबू! हम कहुना कए तीन लाख क जोगार क सकैत छी। ओहि सँ वेशी हमरा सामर्थ नञि अछि।

लुत्ती झा बजलाह - उमा बाबू! अपने तँ एकेबेर मे ठुठ कए देल। कतए पाँच आ कतए तीन, इ कथा कोना भऽ सकैत अछि।

पंकज के माँ के सुजाता बड़ पसिन्न छलथिन्ह। ओ रमाकान्त आ लुत्ती झा के आंगन बजौलन्हि। ओ आंगन सँ दलान क सबटा गप्प सुनि रहल छलीह। हुनका उमा कान्त क दयनियता पर दया आबि गेलन्हि। स्त्रीगण ओहुना पुरुषक अपेक्षा अधिक दयावती होइत छथि। तीनू गोटेक बीच बड़ी काल धरि घोंघाउजि भेल। तीन लाख मे कथा पटि गेल। मोटर साइकिल आ रंगीन टी0 भी0 उपर सँ। उमाकान्त के ई बोझ बहुत भारी बुझायल-मुदा कएल की जा सकैत अछि। जखन-उखड़ि मे मुँह देलनि तँ मूसरक कतेक डर करताह। उमाकान्त के एहि विवाह मे दू

वीघा खेत बिकि गेल। बड़ उत्साह सँ पंकज आ सुजाताक विवाह भेल। बरियातीक स्वागत सेहो नीक जकाँ कएल गेल। ओना तँ आब मिथिला मे एक संझु बरियातीक व्यवस्था होइत अछि।

कतेक ठाम तँ इहो देखल गेल अछि जे तीन संझु बरियाती के डाँर-बान्ह कएल गेल। उमाकान्त सेहो एक संझुए केर पक्ष मे छलाह मुदा रमाकान्त बजलाह औ जी! हम बेटाक विवाह कराबए जा रहल छी आ कि जैबारक भोज खएबाक लेल। अन्ततः उमाकान्त के तीन संझुएक प्रस्ताव मानए पड़लन्हि। विवाहक दृश्य अति रमणीक छल। जेना वुझाइत छल जे इ विवाह पंकज आ सुजाताक नञि भ क राम-सीताक भऽ रहल हो। गामक लोक सब सेहो झुमि रहल छल आ स्त्रीगण गीत-नादमे मस्त छलीह। पूरा वातावरण मधु मिश्रित लागि रहल छल। एहन भव्य वातावरण मे रमाकान्तक ध्यान पाँच हजार टाका पर टांगल छल, जे तिलक में बॉकी रहि गेल छल। ओ उमाकान्त के बजा क कहलथिन्ह जे तिलक बला बाँकी टका देल जाउ। उमाकान्त बजलाह-एखन तँ वर-वरियातीक व्यवस्था मे अपसियांत भेल छी, बाद मे भऽ जेतैक। रमाकान्त विवाह रोकबाक धमकी देमए लगलाह। उमाकान्त बहुत अनुनय-विनय कएलन्हि, बहुत गिरगिरेलाह मुदा रमाकान्त किछु सुनबाक लेल तैयार नञि छलाह। हुनकहु संगे लाचारी छल। विवाहक वाद तिलकक बाँकी टाका भेटब बड़ कठिन होइत अछि। एहि सँ पूर्व पंकज केर पैघ भाय केर विवाह मे बीस

हजार तिलकक टाका बाँकी रहि गेलनि। ओकर जामिनि रमाकान्तक बड़का समधि छलाह। कतेक दिन धरि दूनू समधि केर बीच रुसा-फुली रहल। समादक आदान प्रदान भेल। मुद प्रतिफल किछु नञि बहरायल। अन्ततः रमाकान्तक बीस हजार टाका डूबिये गेल। दूधक जरल मट्ठो फूकि-फूकि कऽ पिबैत अछि आ तँ रमाकान्त अपन माँग पर अड़ल छलाह। उमाकान्त के जखन कोनहु उपाय नञि सूझल, तखन खुट्टा पर बान्हल एकटा गाय हुनका सुपूर्द कएलन्हि। ओहि गाय के उमाकान्त बड़ सख सँ पोसने छलाह आ चिजो करीब दस-बारह हजारक छल मुदा कएल की जाइत। प्रतिष्ठा बचेबाक लेल-दोसर कोनहु उपायो तँ नञि छल। गाय सुपूर्द करैत उमाकान्तक आँखि सँ नोर खसि पड़ल, मुदा सुजाताक विवाहक खुशी मे आँखिक नोर के बाहर नञि निकलए देलन्हि। पंकज आ सुजाताक जोड़ी जेन मिलले आयल हो। दूनू परिवार एहि विवाह सँ अत्यन्त सुखक अनुभव कए रहल छल।

(4)

विवाहोपरान्त पंकज आ सुजाताक चतुर्थी छल। मिथिला मे चतुर्थी आ अन्य स्थान मे ओकरा चौठारी वा सोहाग राति कहल जाइत अछि। दूनू गोटे के एहि मिलन प्रसंग पर कतेक अरमान छलन्हि। एक दोसर के देखबाक लेल, दामपत्य जीवनक नव धारा मे प्रबाहित होएबाक लेल, आ अपना आप के एक दोसर मे समर्पण करबाक लेल दूनू गोटे आतुर छलाह। एहि आतुरताक संग सुजाताक मन मे एकटा डर सेहो छल, जे प्राय

कोनो बलिका के मन मे प्रथम मिलन केर अवसर पर होइत अछि। जिनका संग जीवनक डोर बॉन्हल गेल अछि, सम्पूर्ण जीवन निर्बाह करबाक अछि, ओ केहन लोक छथि, हुनकर स्वभाव केहन छन्हि आदि। सुजाता के बुझल छलन्हि एकटा संगीक घटना जे कोना हुनका दूनू गोटेक बीच चतुर्थीये राति मे झगड़ा भऽ गेल। केओ ककरहु सँ कम नञि छलाह। दूनू मे सँ केओ झुकए बला नञि रहथि। बात बहुत बढ़ि गेल। कतेक पर-पंचैती भेल आ अन्ततः दूनू मे तलाक भऽ गेल। तैं सुजाताक मन मे मिलन केर आतुरताक संग डर सेहो छल! आतुरता एक-दू दिनक नञि चारि दिनक छल। जँ जँ मिलन केर क्षण समीप आबि रहल छल, दूनूक हृदय केर धड़कन बढ़ि रहल छल। ओहुना चतुर्थीक दिन घरक लोक सब अधिक व्यस्त रहैत छथि। दियाद-वाद आ पाहुन परक केर भीड़ रहैत अछि। सभक भोजन-भात केर व्यवस्था रहैत अछि। वर के सेहो ओहि राति सौजन कराओल जाइत अछि। तीन दिनक अनोना उपवास मे रहलाक बाद ओहिदिन वर, कनियाँ आ बिधकरी के नोनगर व्यंञ्जन सँ भोजन कराओल जाइत अछि। ते परिवार मे व्यस्तता रहब स्वाभाबिके अछि। सब काज सँ निवृत्त भेलाक बादे घरबारिक के कोवर घरक ध्यान आबैत अछि। रातिक ग्यारह बाजि गेल छल।

सब पर-परिवार सँ आंगन घर शान्त भऽ गेल छल। सुजाताक संगी सहेली विविध प्रकारक आभूषण आ श्रृगार सँ साजि सुजाता के कोवर घर लऽ गेलीह। सुजाता सेहो कोवर

घर जएबा मे नखरा करए लगलीह। एहि तरहक बुझु तँ एकटा बिधे होइत अछि। कोनो तरहे संगी-सहेली सब जबरदस्ती ठेलि-ठालि कए हुनका कोवर घर मे द, बारह सँ केवाड़ लगा देलन्हि। सुजाताक सेज विविध रंगक फूल सँ सजाओल गेल छल, जेना बुझाइत छल जे रति महारानी अपनहि हाथ सँ कामदेवक सेज सजौने होथि। पूरा कोवर घर रंग-विरंगक फूल आ इत्रक सुगंन्ध सँ मह-मह करैत छल। ओहि कोवर घर आ सेज के सेहो प्रतिक्षा छल पंकज आ सुजाता केर। कोवर घर मे पंकज पहिनहि सँ सुजाताक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। दूनू गोटेक हृदय केर धड़कन आर बढ़ि गेल। कनेक काल धरि दूनू गोटे मौन रहलाह । ओहि नीरवता के भंग करैत पंकज पलंग सँ उतरि सुजाता के हाथ पकड़ि पलंग पर बैसौलन्हि आ पूछलन्हि।

की नाम थीक?

सुजाता लजाइत बजलीह - सुजाता!

पंकज-कतेक धरि पढ़लि-लिखलि छी !

सुजाता - मैट्रिक धरि।

पंकज - आगू किएक नञि पढलहु।

सुजाता - कालेज गाम सँ दूर रहलाक कारण।

ऐहि तरहें दूनू गोटेक बीच गप्प-शप्प शुरू भेल आ एक दोसरक सम्बन्ध मे पूर्ण परिचय भेल। सुजाता पंकज सँ हुनका मॉ, बाबूजी आ परिवारक अन्य सदस्यक स्वाभावक विषय मे

पूछ-ताछ करए लगलीह। पंकज बजलाह-हमरा परिवार मे सभक स्वभाव नीक अछि। अहाँ के कनेको हुनका लोकनिक व्यवहार नञि अखरत। माँ बाबूजी तँ हमर देवते छथि। अहाँ जनैत छी, जतबा टाका अहाँक बाबू जी देलन्हि, ओहि सँ वेशी कतेको ठाम सँ भेटि रहल छल, मुदा माँ तँ अहाँक फोटो देखि मंत्र-मुग्ध भ गेलीह। पता नञि अहाँ फोटोए सँ माँ पर कोन जादू क देलहु। ओ तँ बाबूजी के साफ कहि देलथिन्ह जे पंकज केर विवाह जखन होयत तँ मात्र सुजाता सँ आ एकर समर्थन लुत्ती कका सेहो कएलन्हि। से सुनि हमहु अहाँके देखबाक लेल व्यग्र छलहु। जकरा फोटो मे एहेन जादू अछि ओ सद्यः केहन भऽ सकैत अछि। अहाँ वास्तव मे कुशल जादूगरनी छी। अहाँ के देखि मुनि-महात्मा केर समाधि भंग भऽ जायत। जेना मेनका के देखि मुनि विश्वामित्रक समाधि भंग भेल छल। अहाँ कविक कल्पना आ कविताक सद्यः प्रतिमूर्ति छी।

सुजाता बजलीह - एना किएक हमरा लजा रहल छी। हम तँ मात्र अहाँक दासी छी आ दासी जकाँ सतत अहांक चरण मे रहए चाहैत छी।

पंकज - चरण मे नञि, अहाँ तँ हमरा हृदय मे बसि गेल छी। अहाँ के देखि हमरहु मन मे कविताक भाव आबि रहल अछि।

सुजाता-हँ .... तखन सुनाउ तँ

पंकज - गगन सँ उतरि रहल अछि चान।

बाट जोहैत छथि प्रियतम केर।

मन्द-मन्द मुस्कान।। गगन.....

मृग लोचनि उपर सँ काजर

लगि रहल पंचबाण।

मुख मकरंद दरश लेल आतुर

एकर बाद पंकज के आगु नञि फुरायल तँ सुजाता सँ बजलाह - एकर बाद की कहियैक! सुजाता बजलीह - "पिया केहेन अकान" आ दूनू गोटे भभाकए हँसि देलन्हि। तावत् सुजाता के बुझायल जे बाहर मे सब केओ जगले छथि ओ चुप भऽ गेलीह आ पंकज के सेहो इशारा सँ चुप रहबाक संकेत केलन्हि। ओना तँ दूनू गोटे के आनक मुँहे एक दोसरक परिचय पहिनहि सँ बुझल छल मुदा इ सद्यः परिचय छल आ एक दोसर सँ गप्प-शप्प करबाक बहाना सेहो। दोसर इ परिचय कोवर घरक औपचारिकता सेहो अछि जे अदौ सँ आबि रहल अछि। संगहि वर के कनियाँक हाथ मे मुँह देखाई के रूप मे सेहो किछु देबाक प्रचलन अछि। पंकज सेहो ओकर निर्बाह कएलन्हि। एकटा चमचमाइत हार अपना जेबी सँ निकालि सुजाताक गरदनि मे पहिरा देलन्हि। हार पहिरौलाक बाद सुजाताक सुन्दरता मे आर चारि चाँद लागि गेल ।सुजाता पंकज केर परिचय आ अलौकिक रूप देखि प्रसन्न तँ छलीहे, पंकज सेहो सुजाताक रूप, छवि आ मृदुभाषिता पर मंत्र मुग्ध भ गेलाह। सुजाताक मनक डर खतम

भऽ गेल। दूनूक हृदय केर धड़कन आर बढ़ि गेल। दूनू अपना के एक दोसर मे पूर्ण समर्पण लेल तैयार आ आतुर छलाह। अलींगन लेल औखिक इशारा सँ एक-दोसरक आमंत्रण स्वीकार भेल। अधर सँ अधर सटल आ दू देह एक प्राण भऽ गेल। भारतीय अध्यात्म मे स्त्री के अद्धागिनी सेहो कहल गेल अछि। दूनू क बीच प्रेमालाप होमए लागल। दूनू प्रेम-पाश मे विलीन भऽ गेलाह दूनू केर हृदय केर धड़कन एक भऽ गेल आ ता धरि रहल, जा धरि कौआ नञि बाजल।

(5)

विवाहोपरान्त सुजाता अपना नव परिवारक संग दिन बिताबए लगलीह। पंकज दिन भरि अपना कार्यालय मे व्यस्त रहैत छलाह। घर सँ कार्यालय केर दूरी पन्द्रह किलोमीटर छल। ओ दूरी मोटर साइकिल सँ पूरा करैत छलाह। कार्यालय मे सेहो पंकज केर व्यवहार सँ सब कर्मचारी आ अधिकारी प्रसन्न रहैत छलाह आ सुजाता घरक काज मे अपन दिआदिनी सभक संग हाथ बटाबैत छलीह। सासु-ससुरक सेवा-सुश्रुखा आ खएबा-पीबा पर विशेष ध्यान राखैत छलीह। सांझ मे जखन पंकज आफीस सँ आवथि तँ सुजाता हुनकर कपड़ा-लत्ता के यथा स्थान-राखि जलखै आ चाह लऽ क उपस्थित भऽ जाइत छलीह। ओकर बाद किछ काल घरक आ औफीसक चर्चा दूनू गोटेक बीच होइत छल। सुजाता अपन दिन चर्चा सुनाबैत छलथिन्ह तँ पंकज अपन। पुनः भोजन कए रात्रि विश्राम होइत

छल। सुजाता सुतबा सँ पूर्व नित्य सासु-ससुरक पायर दबौनाई नञि बिसरैत छलीह। बीच-बीच मे सुजाता के अपन माय बाबूजी सेहो मन पड़ैत छलथिन्ह आ हुनका विषय मे सोचि सुजाताक आँखि मे नोर भरि जाइत छल। पंकज सँ कए दिन चर्चा कएने रहथि, जे एक दिन जाऽक माँ बाबूजी के भेंट क अबियन्हु आ पंकज आफीस सँ छुट्टी नञि होइत अछि, कहि कए टारि दैत छलाह।

पंकज आ सुजाता विवाहक किछु दिनक बाद घुमब फिरबाक लेल दार्जिलींग गेलाह। पन्द्रह दिनक आफीस सँ छुट्टी नेने छलाह आ किछु अग्रिम राशि बट खर्चीक लेल सेहो भेटल छलन्हि। ओहिठाम होटल मे एकटा डेरा लेलन्हि। होटलक डेर सँ सूर्योदय केर सीन जे कंचन जंघा पहाड़ पर पड़ैत अछि खिड़किये सँ देखाई पड़ैत छल। मेघक दृश्य पहाड़ पर बड़ रमणीक लागि रहल छल। लोकक बगल दऽ क मेघ उड़ि रहल छल हाथ सँ छुने हाथ भिजि जाइत छल। जाहि मेघ के हम सब एहिठाम कतेक दूर मे देखैत छी, ओहि पहाड़ पर जेना पहाड़ से सटल रहैत अछि। कंचन-जंघा पहाड़ तँ उषा काल मे सोनाक पहाड़ जकाँ दृष्टिगोचर होइत छल आ इ दृश्य अत्यन्त मन भावन लागि रहल छल। ओहिठाम अनेको जोड़ी सँ हिनका लोकनि के भेंट भेल । सब नवविवाहित जोड़ी सुन्नर छल मुदा सब मे बीस पंकजे-सुजाता छलीह। एक दिन एक जोड़ीक बीच किछु अनबन भऽ गेल। पंकज आ सुजाता के जखन पता लागल तँ दूनू गोटे मिलि दूनू के बुझा सुझा कए मेल जोल करौलहि। सुजाता

बजलीह-जखन एहिठाम एतेक खर्च कऽ कऽ आयल छी, तँ एहिठामक आनन्द लिअऽ। इ नोक-झोक करबाक लेल तँ बाँकी जिनगी पड़ले अछि। एहि सँ हुनका-सभक नजरि मे पंकज आ सुजाताक प्रति स्नेह आर बढ़ि गेल। दिन भरि सब केओ पहाड़ पर घुमैत-फिरैत छलाह आ राति मे बैसि बहुत काल धरि हँसी-मजाक करैत छलाह। हुनका लोकनिक हँसी-ठहाका सँ ओहि होटलक शोभा आर बढ़ि जाइत छल। होटल बला सेहो बाजैत छल जे एहन सुघड़ आ सुन्नर जोड़ी आई धरि हमरा होटल मे नञि आयल छल। पंकज आ सुजाता क संगे अन्य जोड़ी सेहो बहुत दिन धरि एहि यात्रा के बिसरल नञि होएताह। जखन यात्रा खतम भेलाक बाद सब केओ अपना-अपना घर जएबाक लेल तैयार भेलाह तँ एक दोसरक विछोह मे सभक आँखि सँ नोर चूबि रहल छल आ ओहि जोड़ी के तँ सब सँ अधिक, जिनका पंकज आ सुजाता सलाह करौने छलाह। होटल केर मालिक सेहो अधैर्य भ गेल। जखन कि ओ व्यवसायी छल आ एहन कतेक लोक ओकरा होटल मे अबैत जाइत छल मुदा इ पन्द्रह दिनक धमा चौकरीक बाद इ विछोह ओकरहु हृदय के विदीर्ण कए देलक। आदमी तँ पंछी होइत अछि। जहिना पंछी एक डारि सँ दोसर डारि आ एक ठाम सँ दोसर ठाम उड़ि जाइत अछि, तहिना आदमी एक ठाम सँ दोसर ठाम चल जाइत अछि मुदा ओकर छाप रहि जाइत अछि। ओकरा स्वभावक चर्चा सतत होइत रहैत अछि।

(6)

पंकज केर सहचरी बनि सुजाता अत्यन्त खुश छलीह। अपन कार्य कुशलता आ आचरण सँ घरक सब लोक के विशेष क सासु आ ससुर के प्रसन्न राखैत छलीह। पंकज केर माँ सेहो सुजाताक रूप, रंग, व्यवहार का चालि चलन सँ अत्यन्त प्रसन्न छलीह। ओ अपना पसन्द आ निर्णय पर बहुत गौरवान्वित छलीह। पास पड़ोस मे सेहो सुजाताक विषय मे प्रशंसा करबा मे पाछु नञि रहैत छलीह। सर्वत्र खुशीक लहरि छल मुदा इ खुशी वेशी दिन धरि नञि रहि सकल। पंकज आफीसक काज सँ बाहर गेल छलाह। ओ प्रायः आफीसक काज सँ बाहर जाइत छलाह। ओहिठाम एक दुर्घटना मे हुनकर मृत्यु भ गेल। जखन इ समाचार रमाकान्त के भेटल तँ सम्पूर्ण परिवार शोकग्रस्त भ गेलाह। पास-पड़ोसक लोक सेहो मर्माहत छल आ सुजाताक तँ बुझु दुनिये उजड़ि गेल ओ अनाथ भऽ गेल। ओकर सहारा छुटि गेल। सासुरक लोक जे काल्हि धरि सुजाता के साक्षात लक्ष्मी बुझैत छलाह, आइ चंडालिनि आ कुलक्षिणी सँ सम्बोधित करए लगलाह। जेम्हरे ताकए लोक मुँह घुमा लैत छल।

बिधबा भेलाक बाद सबसँ पहिने सुजाताक सँउथक सिन्दुर मेटाओल गेल आ चुड़ी फोरल गेल। केश कटबाओल गेल आ उज्जर साड़ी पहिराओल गेल। माँछ मरूवा खाएब बंद भऽ गेल। सुजाता बिधबाक जीवन व्यतीत करए लगलीह। बिधबाक जीवन मे अधिक दिन ब्रते आ उपवास होइत अछि। नीक भोजन नञि कऽ सकैत अछि, नीक वस्त्र नञि पहिरि सकैत अछि आ श्रृंगार-पेटार तँ सहजहि बन्न भऽ जाइत अछि।

कोनो बिधबाक लेल हमरा समाजक इ नियमक पालन करब आवश्यक अछि। एक बिधबाक लेल सुप्रसिद्ध कवि स्व० बैद्यनाथ मिश्र "यात्री" (नागार्जुन) कहैत छथि।

मरब तँ कानत केओ नहिए।

रहब तँ जानत केओ नहिए।

इहो जीवन कोनो जीवन थीक।

एहि सँ कुकुर विलाड़िये नीक।

जाहि सुजाताक सौदर्य देखि एक दिन चाँनो लजाइत छल। ताहि सुजाताक बैधब्य रूप आ पहिरब सँ बुझाइत अछि, जे कोनो चंडालिनि हो। एक तँ दैवक डाँङ्ग आ दोसर समाजक तिरस्कार सुजाताक लेल असह्य भ गेल। बाँकी जीवन काटब कठिन भ गेल।

नैहर मे सुजाताक पिता उमाकान्त एहि घटना सँ बहुत चिंतित छलाह। कतेक उत्साह सँ जमीन-जथा बेचि बेटीक ब्याह कएने छलाह। सब आशा पर पानि फिरि गेल। ओ दुखित पड़ि गेलाह। एक मास धरि खाट धएने रहि गेलाह। सुजाताक माँ दिन-राति हुनका सेवा मे एक क देलनि। कतेक दबाई-दारू कराओल गेल, तखन ओ ठीक भेलाह।

सुजाता एकहि क्षण में सुलक्षिनि सँ कुलक्षिनि बनि गेलीह। हुनका आब सासुर बड़ अखरैत छलन्हि। सब दिश सँ दुत्कारे भेटैत छलन्हि। घरक जे काज बहिकिरनी करैत छल, से आब

सुजाता सँ कराओल जाइत छल आ खएबा-पिबाक लेल केओ नञि पूछैत छल। व्यथा सँ कतेक दिन भुखलो रहि जाइत छलीह। सुजाताक मोन सासुर सँ ऊबि गेल छल। ओकरा बुझवा मे आबि गेल जे ओकर स्थान कोनो बहिकिरनी सँ अधिक नञि छल। जे व्यवहार सुजाताक संग होइत छल, से जँ कोनो बहिकिरीनीयोक संग होइत तँ ओ छोड़ि-छाड़ि क पड़ा जाइत मुदा सुजाता सेहो तँ नञि क सकैत छल। एतेक भेलाक बादो खानदानक प्रतिष्ठा पर आँच नञि आबए सएह सोचैत छल। सासु-ससुरक सेहो पहिलुका स्नेह आ बात-बिचार नञि रहि गेल। बात-बात पर अनर्गल कथा बाजि दैत छलथिन्ह।

सुजाता बाबूजीक बिमारीक बहाना सँ नैहर अएबाक लेल सासु सँ पूछलन्हि। सासु तैयार भ गेलथिन्ह मुदा रमाकान्त तैयार नञि भेलाह। ओ किछ कागज पर सुजाता सँ दस्तखत कराबए चाहैत छलाह मुदा सुजाता तँ पढल-लिखल छलीह ओ रमाकान्तक भाव के बुझि कागज पर दस्तखत करबाक लेल तैयार नञि भेलीह। रमाकान्त चाहैत छलाह जे सादा फार्म पर सुजाताक दस्तखत करबाए ओकरा अपना इच्छानुसार भरिक आफीस मे जमा कऽ दी आ सुजाता के नैहर पठा दी। सुजाता के बहुत तरहे प्रताड़ित कएल गेल। यदा-कदा मारि-पीट सेहो होमए लागल। सौसे गाम मे एकर चर्चा होमए लागल मुदा प्रत्यक्ष रूपे केओ नञि बाजैत छल। दोसरा घरक झगड़ा अपना उपर के लेत। जखन एकर जानकारी उमाकान्त के भेल तँ ओ सुजाताक भेंट करबाक लेल रमाकान्तक ओहिठाम एलाह।

रमाकान्त आ हुनका घरक लोक उमाकान्त के बहुत दुर्दशा केलन्हि आ सुजाता सँ भेंट नञि होम देलन्हि। उमाकान्त सब किछु वर्दास्त कएलन्हि, किएक तँ ओ बेटीक बाप छलाह। रमाकान्तक व्यवहार सँ उमाकान्त के संदेह आर बढ़ि गेल, पता नञि इ सब हमरा बेटीक संग की की कए रहल अछि। ओ सीध। लुत्ती झा क ओहिठाम गेलाह। लुत्ती झा सँ उमाकान्त के वस्तु स्थितिक जानकारी भेटल। आब उमाकान्त सुजाता के अपना ओहिठाम लऽ जेबाक लेल चाहि रहल छलाह आ ओहि मे लुत्ती झाक मदैत केर अपेक्षा कएलन्हि। पहिने तँ लुत्ती झा अपन असमर्थता व्यक्त केलनि मुदा उमाकान्तक बहुत आग्रह कएलाक बाद उमाकान्तक संग रमाकान्त ओहिठाम एलाह। रमाकान्त लुत्ती झा के सेहो बहुत अनाप-सनाप बजलाह मुदा लुत्ती झा ओहि पर ध्यान नहि देलन्हि आ सीधे रमाकान्त क आँगन गेलाह। ओहिठाम लुत्ती झाक नाक पर माछी केओ नञि बैसए दैत छल। अन्त मे लुत्ती झा बजलाह-ठीक छै हम जाइत छी, मुदा जखन थाना-पुलीस आयत तँ हमर दोष नञि देब। अहाँ सब सुजाताक संग जे व्यवहार कएल अछि एखन धरि ओ घरहि मे अछि मुदा आब वेशी दिन इ दबल नञि रहि सकैत अछि। बात कचहरी तक पहुँच जायत। तखन रमाकान्त बिदागरीक लेल तैयार भेलाह। सुजाता उमाकान्त संग नैहर आबि गेलीह आ ओतहि कहुना कए दिन काटए लगलीह।

सुजाता अपन घरक काज मे व्यस्त रहैत छलीह। टोल पड़ोस मे ककरहु सँ कोनहु मतलब नञि राखैत छलीह। खाली समय मे

धार्मिक पोथी पढ़ि अपन समय व्यतीत करैत छलीह। एक दिन पड़ोस मे ककरहु विवाह छल। साँसे गामक लोक के हँकार छल। सुजाता मायक आग्रह पर ओहि विवाह बला आंगन गेलीह। ओना तँ दैवक प्रकोप आ हुनकर दुर्भाग्य छल जे काँच वयस मे ओ विधवा भ गेल छलीह। कोनहु मांगलिक काज मे विधवा नञि जाय ऐहन कोनो बाध्यता तँ अछि नञि मुदा समाज मे एहन बजन्ता लोक होइत अछि, जेकर मुँह केओ नञि रोकि सकैत अछ। जखन कि पीठक पाँछा एहन लोकक सब खिधांसे करैत अछि मुदा सोझां मे बजबाक साहस करकहु नञि होइत अछि।

सुजाता के देखितहि लाल दाई बाजि उठलीह-कहु तँ इ कुलक्षिणी कोना रंग मे भंग करबाक लेल आबि गेल अछि। ऐहि मे तँ सुहागिन के काज पड़ैत छैक। एकरा तँ देखनहु अशुभ होएत। लाल दाईक गप्प सुनि सुजाता के बुझायल जे केओ हृदय मांझ बाण मारि देलक। ओ तिलमिला उठल आ बिना किछु बजनहि अपना आंगन आपस चल आयल।

जखन कि लाल काकी लाल दाई के बजबो कएलन्हि जे एना किएक ओकरा लुलुवा लेलियैक। ओरियाक बुझा दितियैक। ओहो तँ एखन बच्चे अछि। भगवान एहेन दिन देखा देलथिन्ह,ओहि मे ओकर की दोष अछि। ओकर बाद लाल दाई, लाल काकी पर सेहो बमकि उठलीह आ बजलीह हमरा बुते सुर-सुर आ मुर-मुर दूनू नञि भऽ सकैत अछि। हम उचित गप्प ककरहु कहब। चाहे मीठ लागए वा तीत। लाल काकी चुप भ गेलीह। लाल दाई सँ जे मुँह लगाओत ओकरा क्षणे मे

सबटा उकटि-पुकटि क राखि देती। तें केओ हुनका सँ मुँह नञि लगाबैत छल।

लाल दाई केर गप्प सँ सुजाता के एतेक चोट लागल जे इच्छा भलैक, जहर-माहुर खाऽक जान द दी ओकरा एहि समाज सँ सेहो घृणा भ गेलैक। मुदा माँ बाबूजीक असीम स्नेह के देखैत विवश छलीह। सोचथि जे हमरा बाद हुनकर की होएतन्हि। ओहो लोकनि तँ एहि दशा मे सेहो हमरहि देखि क संताप सहि रहल छथि। बुढ़ारी मे हमरा छोड़ि हिनका सभक देखभाल के करत आ दोसर, जान द देला सँ समाज क लोक के की बिगड़त। ओकरा तँ कोनो सीख नञि भेटत आ पुनः अन्य लोकक संगे तँ इएह व्यवहार करत। समाज क सब लोक तँ खरापे नञि अछि। मात्र किछु लोक खराप अछि आ ओकर वर्चस्व पूरे समाज पर अछि। तें एकर प्रतिकार करैक चाही आ प्रतिकारक लेल समय आ अवसर दूनूक प्रतिक्षा तँ करहि पड़त। बिना समय आ अवसर अएने स्वयं दुटि जायब, प्रतिकार कोना करब। सुजाता निश्चय कएलन्हि जे एहि संतापक सहन धैर्य पूर्वक करब। ओहि दिन सँ सुजाता अपना आंगन सँ नञि बहराथि। जँ कतहु सँ बजाहटो आबनि तँ नञि जाथि। पता नञि ओहिठाम लोक की, की बाजत आ से तँ सनुहि पड़त जतेक मुँह ततेक गप्प। हम ककर-ककर मुँह बन्द कएने फिरब। जखन बड़ आवश्यक बुझना जाइन्ह तैखने घर सँ बहराथि वा कतहु जाथि। खाली समय मे माँ बाबूजीक संग धार्मिक चर्चा करथि। इ सब कर्मक फल थीक। एहि पर ककरहु वश नञि चलैत अछि। जेकरा

कपार मे जे लिखल अछि से तँ भोगहि ने पड़त।

(7)

हमर समाज पुरुष प्रधान अछि। पुरुष के सब किछु करवाक आ सबठाम जएबाक अधिकार अछि मुदा नारी के हमरा समाज मे कोनहु अधिकार नञि अछि। विवाहक बाद नारीक स्थिति ओएह रहैत अछि जे खुट्टा सँ बान्हल माल-जालक रहैछ। ओना हुनकर महत्व तँ बहुत अछि। ओ भारतीय समाज मे ममताक प्रतीक मानल जाइत छथि। सम्पूर्ण जीवन मे नारीक जतेक महत्व आ आदर अछि ओ ककरहु नञि अछि। ओ ककरहु स्त्री, ककरहु माय, ककरहु बहिन तँ ककरहु बेटीओ छथि। एहन प्रगाढ़ सम्बन्ध, स्नेह आ बातसल्य प्रायः भारत छोड़ि अन्यत्र कतहु नञि भेटत। हमरा देश मे नारी के बाल्यावस्था सँ बुढ़ धरि तीन सहाराक आवश्यकता पड़ैत अछि। बचपन मे पिताक, विवाहोपरान्त पतिक आ बुढ़ारी मे पुत्रक सहारा।ओ कतहु एकसरि नञि जा सकैत अछि। पुरूष जँ कतबहु दुराचारी होएत, अनाचार करत तैयोओकरा समाज कलकित नञि मानत। पतिक मृत्युक बाद नारी बिघबा भ जाइत अछि। ओकर सब सिंगार-पेटार, पहिरब-ओढ़ब, खान-पान, रहन-सहन संयमित भ जाइत अछि। ओ दोसर पुरूषक मुँहो नञि देखि सकैत अछि। ओकर पुनः विवाह नञि भऽ सकैत अछि मुदा स्त्रीक मृत्युक बाद पुरुषक लेल कोनहु पाबन्दी नञि अछि। ओ जखन चाहए पुनः विवाह क सकैत अछि। कहल जाइत अछि जे पहिने कुलीन ब्राहाण अपन कुल गोत्रक प्रभाव सँ दसो विवाह करैत छलाह

हुनका मृत्यु सँ सब विवाहिता बिधवा भऽ जाइत छलीह। एखन तँ सरकार क कानून सँ हिन्दू एक स्त्री रहैत दोसर विवाह नञि क सकैत अछि मुदा मुसलमान धर्म मे एखनहु चारिटा विवाहक अधिकार छैक। नारी कतबहु सती सावित्री होएत आ एकसरे कतहु चल जायत तँ ओकरा एहि समाजक लोक जिअब दूभर कऽ देत। ओकरा पर तरह-तरह केर लांच्छन लगाओत। ओकर आँचर बड़ साफ होइत अछि, जाहि पर आसानी सँ दाग लागैत अछि। कनेक पायर पिछड़ि गेला सँ ओ कलंकित भ जाइत अछि, चाहे दोष जकर हो। जखन सीता सनक सती शिरोमणि, जिनका लेल तुलसीदास जी लिखने छथि।

सती शिशेमणि सिय गुन गाथा।

सोई गुन अमल अनुपम पाथा।

अग्नि परीक्षा देलाक बादो किछु अयोध्यावासी दुर्वचनक प्रयोग केलनि, तखन आनक बात की? (जखन कि राम जनैत छलाह जे सीता कतेक पवित्र छथि) राम के सामर्थ्य छलन्हि ओ सीताक निंदा केनिहारके कठोर सँ कठोर दण्ड दऽ सकैत छलाह मुदा राम राज्य छल। लोक के उचित-अनुचित बजबाक अधिकार स्वयं रामे तँ देने छलाह। तें ओहि मर्यादा केर रक्षार्थ राम सब किछ जनितहु पुनः सीता जी के वनवास देलन्हि।

हमरा देश मे नारीक उत्कर्ष आ विकासक लेल कतेको संस्था काज कऽ रहल अछि। संसद आ बिधान-सभा मे आरक्षण केर गप्प चलि रहल अछि। कतेक सम्मेलन भ रहल अछि।

कतेक आन्दोलन भ रहल अछि। जिनकर स्थान धरक भीतर छन्हि ओ सड़क पर उतरि रहल छथि। मुदा उचित शिक्षाक अभाव मे सब व्यर्थ बुझना-जाइत अछि। समाजक लोक खास क पुरूष वर्ग ओहि आन्दोलन के अपना बर्चस्व पर खतरा देखि, निष्प्रभावी बनेबाक-लेल विविध प्रकारे आन्दोलन क सह भागिनि कैं प्रताड़ित करैत छथि। ओकरा संगे अनाचार करैत छथि आ ओ सहभागिनी कलंकित भऽ ककरहु मुँह देखेबा जोगरक नञि रहि जाइत अछि। एहि तरहेँ ओ आन्दोलन बिना कोनहु निष्कर्षक खतम भऽ जाइत अछि। जेना कि फेर बैताल ओही डारि पर।

एकरा लेल नारी आ पुरूष दूनू क बीच समुचित शिक्षाक प्रचार-प्रसार होएब आवश्यक अछि।

पुरूष वर्ग कैं इ विश्वास दिआओल जएबाक चाही जे एहि सँ अहाँ के कोनो नुकसान नञि अछि। नारी जँ आगू बढ़तीह तँ अहाँक संग सब काज मे डेग सँ डेग मिलाकए चलतीह। ओकरहु मे मेधा छैक; नौकरी करबाक क्षमता, सामर्थ आ साहस छैक, प्रशासनिक क्षमता छैक, निर्णय लेबा मे दृढ़ता छैक। एहि बात के पुरुष वर्ग के स्वीकार करक चाही। हमर एकटा मित्र छथि प्रोफेसर आ हुनकर कनियाँ सेहो प्रोफेसर छथिन्ह। कनियाँ पढ़ल-लिखल रहलाक कारणे बाजव-भूकब मे वर पकठोस आ विचार धारा सेहो प्रगतिशील मुदा हमर मित्र एकदम उनटा छथि। दूनू-वर-कनियाँक विचार धारा कैं एतेक भिन्नता जेना कोनो नदीक दू कछेर। हम सब हँसी-मजाक मे कहिओ दैत

छियन्हि जे एहने छल तँ पढ़ल-लिखल कनियाँ सँ विवाह किएक कएलहु। मुदा हुनका पर कोनो असर नञि। बुझु जे कुकुरक नाङ्गरिये छथि। नतीजा भेल जे दूनू प्राणी फराक छथि आ अपन-अपन चुल्हा फुकैत छथि। दोसर-दिश नारी के सेहो इ बात बुझाओल जा सकैत अछि जे अहाँ प्रेमक प्रतिमूर्ति छी। उच्च श्रृंखलता अहॉक बाटक बाधक भऽ सकैत अछि। मर्यादा मे रहि क अहाँ सब किछु कऽ सकैत छी। सड़क पर उतरि आन्दोलन करब अहॉक लेल उचित नहि। जँ ओ आन पुरुष के अपन भाय बुझि ओकरा संगे व्यवहार करथि तँ के एहन-भाय होयत जे अपना बहिनिक शौर्य आ सतीत्वक रक्षा नञि क ओकरा पतित बनाओत। एहन पहिराबाक उपयोग नञि करथि जाहि सँ ककरहु मनक भीतर बैसल चोर के आमंत्रण हो। आई नारीक दुरावस्थाक एक कारण पाश्चात्य सभ्यताक पहिराबा सेहो अछि। तेहेन-तेहेन ने वस्त्रक उपयोग करतीह, जकरा देखि जुअनकाक कोन गप्प, बुढ़बोक मन ललचि उठैत अछि। कहबाक तातपर्य जे दोष एके दिश नञि दूनू दिश अछि। किछु लोहोक दोष तँ किछु लोहारोक।

मर्यादित रूपेँ सेहो आन्दोलन भऽ सकैत अछि। आन्दोलन केर अभिप्राय मात्र बिरोधक आभास कराएब होइत अछि। जखन ककरहु पति वा पत्नीक बीच झगड़ा होइत अछि, तँ ओहि मे दू तरहक व्यवहार देखबा मे अबैत अछि। एक मे दूनूक बीच तनाव बढ़ि जाइत अछि। अलंकारक आदान-प्रदान होइत अछि। बर्त्तन-बासन फुटैत अछि। अड़ोसी - पड़ोसीक आगमन

होइछ आ जतेक मुँह ततेक गप्प। किछु लोक पुरुषक आ किछु स्त्रीक पक्ष लऽक एक दोसर के उलहन - उपराग दैत छथि। मुदा अधिकांश लोक स्त्रीयहि पर सबटा दोषारोपन करैत छथि। केहन कुल आ खानदानक अछि, कोन गाम केर अछि.. .....आदि आदि। जखन कि ओहि भीड़ मे वेशी दाइये - माय रहैत छथि। दोसर पक्ष मे झगड़ा भेलाक बाद कनियाँ रूसि रहैत छथि, भोजन करब छोड़ि दैत छथि। दू-चारि दिन उपवास मे रहैत छथि। जखन पास - पड़ोसक लोक बुझैत अछि, तखन ओ सब जाऽक ओहि स्त्री कँ ढ़ाढ़स दैत अछि। इ कोनो नीक खानदानक अछि आ पुरूषक लेल कठोर सँ कठोर शब्दक प्रयोग करैत अछि। सम्पूर्ण पुरूष जाति के कठोरक उपमा सँ विभूषित करैत अछि आ अन्त मे ओहि पुरूष के विवश भऽ अपना कनियाँ सँ सलाह करए पड़ैत अछि। ओकरा त्याग आ तपस्याक आगॉ झुकए पड़ैत अछि।

जेना तिलक - दहेज विरोध के लिअ। ऐहि मे बेटाक बाप के इ सन्तोषे नञि होइत अछि, जे कतेक तिलक माँगल जाय। अनाप-सनाप तिलक मे टाका क माँग करैत अछि आ उपर सँ गाड़ी, रंगीन टी० भी०, फ्रीज इ तँ आई-काल्हिक फैशन भऽ गेल अछि। बेटा देखबा मे भूत, बाप यमदूत मुदा गाड़ी चाही राजदूत। ओकर बादो मन नञि भरैत अछि। विवाह-द्विरागमन केर बादो कतेक चिजक माँग होइत रहैत अछि।

जकर पूर्ति नञि भेला पर कनियाँ के बहुत तरहे प्रताड़ित कएल जाइत अछि। कखनहु काल परिणाम बड़ भयाबह भऽ

जाइत अछि। कनियाँ या तँ अत्महत्या क लैत अछि वा मरबा देल जाइत अछि। एकरा लेल मर्यादित रूपे आ सूझ-बुझक संग नारी आन्दोलन चलाओल जा सकैत अछि। जँ सब कन्याँ इ निर्णय करथि जे तिलक दहेज मंगनिहारक ओहिठाम विवाह नञि करब आ एहि पर प्रतिबद्ध भऽ जाथि, तैखन इ तिलक - दहेजक व्यवस्था खतम भऽ सकैत अछि आ एहि मे नारीकेँ ककरहु प्रताड़ण केर सामना सेहो नञि करए पड़त।

बाजार मे देखैत होएब जे जखन सामग्रीक संख्या अधिक होइछ आ लेबालक संख्या कम तँ वस्तुक दाम खसि पड़ैत अछि मुदा जँ सामग्रीक संख्या कम आ लेबालक संख्या अधिक होइछ तँ दाम बढ़ि जाइत अछि। ठीक एहि तरहक एकरहु हालत अछि। जँ तिलक देनिहारक संख्या कम भ जायत तँ लेनिहारोक संख्या कम भ जायत। बेटीक बाप केँ इ विवशता छैक जे बिना तिलक देने बेटीक विवाह नञि भऽ सकैत छैक। ते जमीन-जथा बेचिओ कऽएहि सँ मुक्ति पाबऽक लेल आतुर रहैत अछि आ बेटाक बाप के जखन तिलक भेटि रहल छैक तँ ओ किएक छोड़त। तें एहि मे आगु नारीयेकेँ बढ़ए पड़त। कोनहु सामाजिक कुरिति वा कोढ़ के खतम करबाक लेल किछु ने किछु तँ मूल्य चुकबैये पड़त। जेना देशक आजादीक लेल कतेक नेता जेल गेलाह, कतेक फाँसी पर झूलि गेलाह। जँ ओ पहिनहि सोचि लितथि जे हम सब इ कष्ट किएक सहब तँ इ देश कहिओ आजाद नञि होयत। तहिना एहि आन्दोलन मे बलिदान ककरहु होएत आ फायदा अगिला पीढ़ी के। एकरा लेल सरकारो कतेक कानून

बनौने अछि। तिलक लेनिहार आ देनिहार दूनू दोषी मानल जाइत अछि मुदा बेटीक बाप केँ तँ विवशता छैक। ओ बिलाड़िक गरदनि मे घंटी बान्हत तँ कोना।

एक दिन टी० भी० देखैत छलहु। परिचर्चा छल मुस्लिम पर्सनल कानून मे संशोधन केर आवश्यकता पर। ओहि परिचर्चा मे एकटा मौलाना साहेब केर तर्क हमरा बड़ समचीन लागल। ओ बजलाह जे कानून तँ अपना स्थान पर सही अछि। ओहि मे कोनो बदलावक आवश्यकता नञि अछि। बदलाबक आवश्यकता अछि तँ आदमीक सोच मे। नियमक पालन सही ढ़ंग सँ नञि भ रहल अछि। ओकर पालन सब केओ अपना-अपना ढंग सँ करैत छथि। ओकर पहलू के तोड़ि - मरोड़ि क गलत ढ़ंग सँ समाजक समक्ष प्रस्तुत करैत छथि। जेना तलाकक बात लिअऽ। जखन पति-पत्नीक बीच मतभेद बढ़ि जाइत अछि। दूनूक जीवन निर्बाह दूभर भऽ जाइत अछि। तखनुक स्थिति मे तलाकक प्रावधान अछि, मुदा आई काल्हि पत्नीक पिता सँ किछु लेबाक हो तँ तलाकक धमकी देल जाइत अछि। इ ने उचित अछि आ ने नियम मे एहन प्रावधान अछि। कहबाक तातपर्य जे नियमक सदुपयोग होएबाक चाही दुरूपयोग नञि। एकरा लेल सब पक्ष के शिक्षित कराएब सेहो समाजेक दायित्व अछि।

हमर एकटा मुसलमान मित्र छथि। हुनका बेटी केँ तलाक भेटि गेल। ओ मित्र बेटीक विवाह कतेक खर्च आ उत्साह सँ कएने छलाह। बेचारे ओहि घटना सँ अत्यधिक मर्माहत भ गेलाह।

कारण एक मध्यम वर्गीय परिवार मे पुनः ओतेक खर्च कऽ कऽ दोसर बेर निकाह कराएब कठिनाह अछि। किछु एहने स्थिति उमाकान्तक सेहो अछि।

(8)

लुत्ती झाक अपन - अलग व्यक्तिव छल। ओना तँ ओ नामी छलाह लुत्ती लगाबऽ मे मुदा ओ स्पष्ट वक्ता छलाह। उचित - अनुचित ककरहु मुँहे पर बाजि दैत छलाह। तें कतेक लोक के हुनकर बाजब अप्रिय लागैत छल। ते लोक के लागैत छल जे ओ लुत्ती लगाबैत छथि। कौखन ककरहु काज करएबाक लेल मक्खन लगेबाक काज सेहो करैत छलाह। जेना कि पंकज आ सुजाताक विवाह मे पंकज केर माय के बहुत मक्खन लगौने छलाह। जकर परिणाम भेल जे पंकज केर माय ओहि विवाहक लेल सोलहो आना तैयार रहथि। ओना तँ रमाकान्त के टाका कम भेटलन्हि। ओ कुन-कुन करैत रहलाह मुदा पत्नीक निर्णय केर आगाँ विवश छलाह।

आई जखन सुजाता विधबा भ गेलीह तँ रमाकान्तक प्रस्ताव के लुत्ती झा सेहो विरोध कएने छलाह मुदा पूर्णतः नञि अंशतः। हुनका विचार मे नौकरी मनीष कें आ टाका जे भेटैक से सुजाता कें। सम्भवतः ऐहि विचार सँ सुजाता सेहो सहमत छलीह मुदा रमाकान्तक प्रस्ताव के मुताबिक नौकरी मनीष के आ टाकाक स्वामित्व रमाकान्त के। लुत्ती झा क सोच छल, जखन एहि कामधेनु के इ सब एतेक तरपा रहल अछि। तखन सब किछु

हाथ सँ निकलि गेलाक बाद की दशा करत। तें लुत्ती झा के रमाकान्तक प्रस्ताव पर एतराज छल। एहि लेल दूनू मित्र मे अन-बन सेहो भ गेल आ कतेक दिन धरि एक दोसर सँ गप्पो-शप्प नञि भेल।

लुत्तीझा क व्यक्तिवक समबन्ध मे एकटा आर कथा अछि। एक बेर रमेश आ नरेश मे बड़ पैघ झंझट होइत-होइत बाँचि गेल। जकर सबटा श्रेय लुत्तीझा के छलन्हि। लुत्तीझा जँ झगड़ा लगेबा मे निपुण छलाह तँ झगड़ा छोड़एबा मे सेहो माहिर छलाह बात भेलैक जे एक दिन लुत्ती झा कोनहु काजे अपन रस्ता धएने चल जाइत छलाह। ओ देखलन्हि जे नरेश सातो भाय लाठी भाला चमका रहल अछि, आ रमेश के बेछोह गारि पढ़ि रहल अछि। रमेश गामक अधिक टाका बला व्यक्ति छल आ नरेश के सेहो अपना सब समांङ्ग पर नाज छलैक। जखन सातो भाय लाठी भाला पकड़ैत छल तँ कतबहु हसेरी के खसा दैत छल। लुत्ती झा के उत्सुकता भेलन्हि जे देखी की भ रहल छैक। ओ सहटि क नरेशक दलान पर गेलाह आ पूछलन्हि की हौ नरेश बाबू! की बात थिकैक। नरेश बाजल - लुत्ती कका! इ सार रमेशवा बिना कोनहु कसूर के हमरा हरबाह के पिटि देलक। ओकरा कथीक गुमान छैक। ओ बड़ धनीक अछि तँ अपना घर मे मुदा हमहू सब मसोमात तँ नहिए छी ने। आई सार के सबटा छठिहारक दुध मोन पारि देबैन्ह। हुनकहु तँ इ बुझाइन्हि जे ककरा सँ पाला पड़ल अछि। लुत्ती झा सोचए लगलाह - इ तँ जुलूम भऽ रहल अछि। इ दूनू परिवार हमरा गामक नाज

थीक। एकटा धन सँ तँ एकटा समाङ्ग सँ मुदा आपस मे लड़त तँ गामक बदनामी आ बर्बादी दुनू होयत।ओ सोचए लगलाह जे इ झगड़ा कोना क शांत होयत ।लुत्ती झा क लुत्ती अपन रंग देखौलक ।ओ बजलाह- नरेश बाबू! एकटा बात कहु । नरेश बाजल-एखन हम किछु नञि सुनब। पहिने हमरा फरिआक आबए तँ दीअऽ। लुत्ती झा- पहिने हमर गप्प सुनि लिअ। कनेक अस्थिर होउ। हमहू ओएह गप्प कहि रहल छी। नरेश जखन अस्थिर भेलाह तँ लुत्ती झा बजलाह - जँ जानि बुझि क रमेश अहाँ क हरबाह के मारने होथि तखन तँ ओ अवश्य दोषी छथि मुदा जँ अनजान मे मारने होथि आ एकरा लेल ओ पश्चाताप क चुकल होथि, तखन की कएल जायत।

लुत्ती झा एक दम झूठ बाजि रहल छलाह मुदा एतेक मिला कए बाजि रहल छलाह, जे नरेश के सेहो सोचबा पर विवश कए देलक आ इएह हुनका मे विशेष गुण छल। नरेश आश्चर्य करैत बाजल लुत्ती कका अहाँ कहए की चाहैत छी, से ने कहु। अहाँ तँ सब दिन आगि मे घी ढ़ारक काज करैत रहलहु आई जल कोना ढ़ारि रहल छी।

लुत्ती झा बजलाह - हम तँ सब दिन आगि के जले ढ़ारैत रहलहु मुदा बुझै बला के जँ घी बुझाइत अछि तँ एहि मे हमर की दोष।

नरेश हँसैत बजलाह - ठीक छै! असली गप्प पर आऊ। अहाँ की कहए चाहैत छी।

लुत्ती झा - हम इएह कहए चाहैत छी जे रमेश अहॉक हरबाह के अनजान मे पिटलन्हि। अहॉक हरबाह जे हुनकर नुकसान कएने अछि, ओहि पर केओ व्यक्ति इएह क सकैत छल। मुदा जखन हम हुनका कहलियन्हि जे अपने इ की कएल, इ तँ नरेशक हरबाह छल। ताहि पर ओ अपना कृत्य पर पश्चाताप करए लगलाह आ कहए लगलाह लुत्ती कका हमरा सँ बड़ पैघ अनुचित भऽ गेल। आब की कएल जाय, लुत्ती कका, अहीं कोनो उपाय करू। हम नरेश सँ माफी मांगक लेल तैयार छी। तखन हम कहलियन्हि ठीक छै, हम जा रहल छी, नरेश के सब बात बुझा देबैन्ह मुदा एहि ठाम तँ.....

नरेश बाजल ठीक छै, लुत्ती कका, जखन ओ अनजान मे पिटलक आ माँफी माँगक लेल तैयार अछि। तखन व्यर्थक झगड़ा बढ़ौला सँ की फायदा। लुत्ती कका अहॉ सही समय पर आबि गेलहु, नञि तँ आइ की भऽ जाइत कहि नञि सकैत छी आ बात ओतहि खतम भऽ गेल।

इ सब गप्प जखन रमेश के पता लागल तँ ओ सेहो लुत्ती झा आ हुनकर चमत्कारक आभार प्रकट कएने छल।

किछ दिनक बाद रमाकान्त कोनो तरहे लुत्ती झा के मनाय उमाकान्तक ओहिठाम गेलाह। उमाकान्त रमाकान्त सँ वेशी लुत्ती झा क आदर करैत छलाह। किएक तँ सुजाताक विवाह मे जँ हुनका लुत्ती झा क मदैति नञि भेटैत तँ ओ बौआइते रहि जैतथि। ओना तँ लुत्ती झा रमाकान्तक परम मित्र छलाह मुदा

सुजाताक प्रति रमाकान्तक परिवारक व्यवहार सँ ओहो क्षुब्ध छलाह। पंकज केर मृत्यु एक संयोग छल। ओहि मे ककरहु दोष देव उचित नञि अछि। जखन कि एहि घटना सँ सब सँ अधिक मर्माहत सुजते छलीह। पंकज हुनकर पति छलथिन्ह। पंकज के नञि रहला पर सुजाताक जीवन अपूर्ण रहि गेल। ओ स्वयं अनाथ भऽ गेलीह मुदा पुरा परिवार ओकरा लेल सुजते पर दोषारोपन करैत छल। ओकरा संगे सतत दुर्व्यवहार करैत छल आ से लुत्ती झा के देखल नञि जाइत छल। ओ रमाकान्तक ओहिठाम आन - जान सेहो कम कए देने रहथि। सुजाताक प्रति दुर्व्यवहार देखि पास - पड़ोसक लोक सेहो द्रबित भऽ उठैत छल मुदा दोसरक घरक गप्प मे हाथ द झगड़ा बेसाहब उचित नञि बुझैत छल। पास - पड़ोसक लोक चर्चा करैत छल जे धन्य अछि सुजाता जे एतेक दुर्गञ्जन बर्दास्त कए रहल अछि। दोसर रहैत तँ जहर-माहुर खाऽक मरि जाइत वा भागि पड़ाइत।

लुत्ती झा रमाकान्तक संगे जएबा सँ एक दिन पूर्वहि उमाकान्त के सब बात बुझा देने छलाह जे हम आ रमाकान्त मित्र छी। हम ओकरा दिश सँ अहॉके बहुत दबाब देव मुदा अहाँ अपन बेटीक भविष्य सोचि कोनहु निर्णय करब। हम सब कतबहु दबाब देव मुदा अहॉ ओएह करब जे सुजाता चाहथि आ जाहि सँ हुनकर कल्याण होन्हि। हुनका संगे पहिनहि बहुत अन्याय भऽ चुकल अछि, आब आगू नञि होमक चाही। लुत्ती झा क गप्प सँ उमाकान्त के सेहो बल भेटल।

दोसर दिन संध्या काल उमाकान्त अपना दलान पर बैसल

छलाह। तावत् लुत्ती झा क संग रमाकान्त पहुँचलाह। उमाकान्त दूनू गोटे के नीक जकाँ स्वागत-सतकार केलन्हि। चाह, जलखै आ रातुक भोजन के सेहो इन्तजाम कएल गेल। ओहि राति दूनू गोटेक विश्राम सेहो ओतहि भेल। ओही क्रम मे रमाकान्त अपन प्रस्ताव उमाकान्त के सुनौलन्हि, उमाकान्त तँ लुत्तीझाक गप्प सँ पूर्वहि सँ आश्वस्त छलाह, ओ बजलाह रामकान्त बाबू! ई तँ अहाँक अपन घरक गप्प थीक। एहि मे हम की कऽ सकैत छी। जखन हम बेटी अहॉ के सुपूर्द कए देल तँ ओकरा पर हमरा सँ वेशी अहॉक अधिकार अछि आ हम अहाँक अधिकार मे दखल देब उचित नञि बुझैत छी। हँ, एतेक हम अवश्य चाहब जे हमरा बेटी के कोनो कष्ट नञि होमए। ओकरा जँ कष्ट हेतैक तँ हमरहु कष्ट होएत। भगवान कँ जे कष्ट देबाक छलन्हि, से तँ देबे केलथिन्ह। ओकरा तँ हम सब बाँटि नञि सकैत छी आ कहैत - कहैत उमाकान्त भावुक भ गेलाह। हुनकर आँखि सजल भ गेल आ से देखि लुत्ती झा आ रमाकान्तक आँखि सेहो डबडबा गेल।

रमाकान्त बजलाह - जे होएबाक छल से तँ भ गेल। ऐहि पर ककरहु बस नञि अछि। आब आगूक लेल सोच विचार करबाक आवश्यकता अछि। एहि विषय पर अपने बेटी सँ गप्प कएल जाऊ। उमाकान्त उठिक आंगन गेलाह आ एहि विषय मे सुजाता सँ गप्प केलन्हि। गप्प मे सुजाताक माय सेहो छलीह।

उमाकान्त दलान पर एलाह आ रमाकान्त के भोजन करबाक लेल आग्रह केलन्हि, संगे इहो कहलन्हि जे आगुक गप्प अंगने मे

होयत। जखन रमाकान्त आ लुत्ती झा भोजन करबाक लेल आंगन गेलाह तँ सुजाता बजलीह-बाबू जी, अपनेक प्रस्ताव उचित अछि मुदा कनेक सोचल जाऊ, भाय-भैयारी कतेक दिन चलैत अछि। हमरा आगु-पाछु तँ केओ अछि नञि। अहॉक बाद हमर की हाल होएत। समाज के अपने देखिये रहल छियैक। नेन मणिक उदाहरण अपनेक समक्ष अछि। आई नेनमणि के के देखि रहल अछि। बेचारी अन्न-वस्त्रक लेल कोना बौआय रहल अछि। काल्हि हमर ओ हाल नञि होएत, एकर की गारंटी अछि। रमाकान्त तँ सुजाताक गप्प सुनि आवाक् रहि गेलाह, ओ तँ एतेक गप्प सोचनहु नञि छलाह जतेक सुजाता बाजि गेलीह। सुजाताक गप्प सँ मने-मने लुत्ती झा आ उमाकान्त प्रसन्न छलाह। हुनका लोकनि के सुजाताक बुद्धिक आगाँ अपना बुद्धि पर दया आबैत छल।

रमाकान्तक सब बुद्धि फेल भ गेल। ओ बुझि गेलाह जे एहिठाम हमर किछ नञि चलि सकैत अछि, तै ओ पिटायल जूआरी जकॉ बजलाह - हम तँ अहॉके अपन परिवारक हिस्सा बुझैत छी आ अहींक भविष्यक लेल इ सब सोचि रहल छी, मुदा हमरा एहिठाम सँ निरास भऽ क जाय पड़त।

सुजाता बजलीह - अपने क सोच सही अछि, मुदा एक पक्षीय अछि। जँ हमरा अपना परिवार क हिस्सा बुझैत छी, तखन एतेक झमेला किएक। तथापि हम अहॉ के निरास नञि करब, मुदा हमरहु एकटा शर्त अछि।

रमाकान्त - से की?

सुजाता - अहॉ इएह ने चाहैत छी जे नौकरी मनीष के आ टाका अहॉ के द दी अहॉ सब केओ जीवन भरि हमर भरण - पोषण करब।

रमाकान्त - हँ..... हँ..... सएह चाहैत छी।

सुजाता - हम चाहैत छी जे नौकरी आ टाका दूनू मनीषे के द दियन्हि मुदा.....

रमाकान्त - मुदा की?

सुजाता - ओहि सँ पूर्व अहॉ मनीष के कोर्ट सँ हमर दत्तक पुत्र बना दिऔन्ह। हम सब किछ हुनके द देबन्हि आ सबटा अहींक परिवार मे रहि जायत। लुत्ती झा - वाह - वाह घी कतए हेरायल, राहरिक दालि मे। ई तँ बड़ उत्तम विचार अछि। एहि सँ दूनू घर आबाद रहत। एतेक बात तँ हम सब सोचिओ नञि सकैत छलहु। मुदा रमाकान्त भीतरे-भीतर कुनमुना कए रहि गेलाह। ओ तँ लुत्ती झा के अपना मदैति लेल अनने छलाह मुदा इहो तँ ओकरहि सभक हँ मे हँ मिलबए लगलाह। अही स्पष्ट बादिताक लेल तँ लुत्ती झा बदनामो छथि। लुत्ती झा के बड़ आश्चर्य भेल जे एहि गप्पक क्रम मे सुजाताक उपर भेल दुर्व्यवहारक चर्चा सुजाता एको बेरि नञि केलन्हि। लुत्ती झा के उम्मीद छल रो रमाकान्तक गप्प पर पहिने सुजाता भभकि उठतीह, मुदा से सब नञि भेल। सुजाता समुद्र जकाँ गम्भीर भऽ सबटा

लहरि अपना पेट मे रखने रहि गेलीह।

रमाकान्त सुजाताक गप्प पर सोचए लगलाह - इ तँ ओएह भेल जे बेल सँ खसलहु आ बबूर पर अटकलहु। रमाकान्त बजलाह - ठीक छै! हम गाम पर सँ विचारि पुनः अबैत छी।

(9)

सुजाता धब्ल वस्त्र धारण कएने कार्यालय पहुँचलीह। जतए पहिने पंकज काज करैत छलाह। पंकज मात्र दू बरष ओहि कार्यालय मे काज कएने रहथि। आफीसक लोक सँ बड़ मधुर सम्बन्ध छलन्हि मुदा पंकज केर मृत्यु भेना दू वरष बिति गेल तैयो एखन धरि हुनका परिवार के ने केओ खोज़-खबरि लेलक आ ने कोनो राहत देलक। एखन धरि सुजाता के नियुक्ति पत्र सेहो नञि भेटल अछि जखन कि सब कागज-पत्र डेढ़ बरष पहिने जमा भ चुकल छल। पंकज-केर मृत्युक बाद आफीसक सब काज केनिहारक व्यवहारे बदलि गेल अछि। पंकज जखन जिबैत छलाह तँ सब कर्मचारी हुनका ओहिठाम छुट्टीक दिन मे अबैत छल आ घंटो बैसि चाह जलखै करैत छल। सुजाताक संगे मिठ-मिठ गप्प-शप्प सेहो करैत छल मुदा आई केओ सुजाता के चिन्हाबाक लेल तैयार नञि अछि। सब देखि के मुँह घुमा लैत अछि। पता नञि ओकरा सब के की विवशता छैक। एहि काज मे सासुरक लोक कोनो मदति नञि केलक। सासुरक लोक अपनहि फेर मे छल जे सुजाता स्वीकार नञि केलक हुनका लोकनिक विचार छल जे सुजाता अपना जेठका जाउत

मनीष के नौकरी लेल उत्तराधिकारी बना देथि आ आफीस सँ जे टाका भेटत से घर मे लगा देथि मुदा सुजाता अपन भविष्य आ समाजिक मानसिकता के देखैत परिवारक प्रस्ताव के ठुकरा देलन्हि। पंकज-केर मुइना एको मास नञि भेल छल आ सुजाता संगे जे व्यवहार कएल गेल, ओकरा सुजाता बिसरल नञि छलीह। ओकरा सासुरक लोकक चक्रचालि बुझबा मे आबि गेल। सब काज कराओलाक बाद ओकरा दूधक माँछी जकाँ फेकि देल-जायत। एकर आभास सुजाता के भ गेल छल। ओ कतेको बिधबाक संग भेल अत्याचार के देखि चुकल छलीह। हुनकहि गाम मे एकटा बिधवा छलीह आ नाम छलन्हि नेनमणि।

नेनमणि के पति सेहो सरकारी विभाग मे नौकरी करैत छलथिन्ह। नेनमणि के पति दुखताह छलाह। कतेको इलाज भेल मुदा हुनकर बिमारी ठीक नञि भेल। हुनका इलाज मे परिवारक कोनो मदैति नञि भेटल। कहुना कहुना नेनमणि कर्ज लऽक इलाज-करौलन्हि, मुदा अन्ततःपति स्वर्गीय भऽ गेलथिन्ह।नेनमणि स्वभाव सँ सोझ सपाट छलीह। कोनो छः पाँच नञि बुझैत छलीह। परिवारक लोक हुनका बड़ आदर आ सुख सँ राखय लागल। जे कोनो काज होइत छलओ नेनमणि केर विचार सँ। एहि तरहें नेनमणि के पड़तारि क नौकरी हुनकर जाउत ल लेलक आ जे टाका भेटल से परिवारक काज मे खर्च कएल गेल। जँ एतबहि होइत तँ कोनो गप्प नञि मुदा आफीसक कागजक बहाने हुनकर हिस्साक जमीन सेहो लिखबा लेलक। चारि पाँच साल धरि तँ नेनमणि जेना बुझायल जे राज करैत

होथि मुदा धीरे-धीरे हुनका बात-बात पर झाड़ब आ मारब दूनू प्रारंभ भऽ गेल आ आई काल्हि तँ भोजनो वस्त्र पर आफत अछि। जे नेनमणि एक दिन घीक छानल खाइत छलीह, तनिका आई सूखलो रोटी नञि भेटि रहल अछि।

सुजाता तँ पढ़ल-लिखलि छलीह। भविष्यक आशंका सँ सतर्क होइत सासुरक प्रस्ताव पर सहमत नञि भेलीह। सुजाता अपन काज करेबाक लेल एकसरहि आफीसक चक्कर लगाबए लगलीह। आफीसक इ दस्तूर छल जे एहि तरहक काज मे बिना किछु नेने फाइल आगू नञि ससरैत छल मुदा जँ एतबहि रहैत तँ कोनो बात नञि। आफीसक कर्मचारी, अधिकारी सँ लऽक यूनियन केर नेता धरि सभक गीद्ध दृष्टि सुजाता पर छल। सुजाता एक बरख धरि आफीसक चक्कर लगबैत रहलीह मुदा हुनकर फाइल टस सँ मस नञि भेल। एक टेबुल सँ दोसर टेबुल पर नञि गेल। सुजाता परेशान भ गेलीह।

एक दिन एकटा महिला कर्मचारी सँ सुजाता के भेंट भेल। ओकर नाम छल कलाबती। कलाबती ओहि आफीसक पुरान कर्मचारी छल। ओ सभक नस-नस जनैत छल। ओ बाजब-भूकब मे मुँह फट्ट सेहो छल। अन्य कर्मचारीक संग ओकर गप्प-शप्प आ व्यवहार बड़ा बेतुका लगैत छल। वयस करीब 50 सालक छल। ओ सुजाता सँ सब गप्प सुनला बाद अपना बगल मे बैसाय बाजल-बेटी अहाँ बहुत परेशान बुझा रहल छी। हम देखि रहल छी जे अहाँ कतेक दिन सँ दौड़ि रहल

छी मुदा यावत् एहिठामक दस्तूरी नञि चुकाएव, तावत कोनो काज नञि होयत। एहिठाम तन आ धन दूनू देमए पड़ैत अछि। अहाँ एहिठाम जाहि समाज के देखि रहल छी, ओ मनुक्खक समाज नञि, गीद्धक समाज थीक। सबहक गीद्ध दृष्टि अहीं पर लागल अछि। सब अहाँक देह नोचबाक लेल आतुर अछि। केवल मौका केर बाट ताकि रहल अछि आ बिना नोचने कोनो काजो नञि करत। स्त्रीक लक्ष्मण रेखा तँ ओकरा घरक चौखटि होइत अछि। ओकरा पार कएलाक बाद ओ अपन सतीत्वक रक्षा कथमपि नञि क सकैत अछि। जखन इ दुर्भाग्य भेल तँ आर कतेक नीक बेजाय होएत। जँ एकर चिंता करब तँ घरे मे रहू। हमहू अहीं जकाँ बहुत बौएलहु। बौआइत-बौआइत थाकि गेलहु। कतहु कोनो बाट नञि भेटि रहल छल। तखन विवश भ एहि दलदल मे फसलहु। एहि गीद्ध समाजक सोझां आत्म समर्पण केलहु। तखन-जाऽकऽ एक मास मे सबटा काज अपने-आप भ गेल। जा धरि एकरा सभक सोझा समर्पण नञि कएने रही, केओ भरि मुँह बाजैतो नञि छल।

अभागिन तँ हम सब तैखन भ गेलहु, जखन पति बिहीन भ गेलहु। आब तँ डेग-डेग पर अहाँ के एकरहि सँ पाला पड़त। एकरा सब सँ कोनो तरहक तकरारो सँ नुकसान अही के होयत। झूठ-मूठ क बदनाम कए देत। गलत अफवाह उड़ा देत आ अहाँ कतहु के नञि रहब। इ एकरा सभक अन्तिम-हथकंडा थीक। तीन बरष पूर्वक गप्प थीक। अहीं सनक सुन्नर एकटा बिधबा नौकरीक लेल आयल छलीह। दौड़ैत-दौड़ैत बहत परेशान भ

गेलीह मुदा केओ किछु नञि सुनलक। हुनकर नाम छलनि रेखा। रेखा जखन आरिज भ गेलीह तँ कार्मिक पदाधिकारी हिनका दोसर दिन एबाक लेल कहलक। रेखा के गेलाक बाद सब केओ बैसार केलक आ तय केलक जे एकरा बदनाम क देल जाय। एकरा पटेबाक लेल दोसर कोनो उपाय नञि अछि।

दोसर दिन जखन रेखा कार्मिक पदाधिकारी क कक्ष मे गेलीह तँ ओ बजलाह-अहाँ बड़ा बाबू लग जाउ आ कहबैन्हि जे फाइल लऽक साहेब बजौने छथि। रेखा बड़ा-बाबू लग गेलीह आ साहेब केर आदेश सुनौलन्हि। बड़ा-बाबू पूर्व योजनाक-अनुसार पहिनहि सँ तैयार छलाह। ओ बजलाह-जे गप्प मनोज के कहने छलियन्हि से कनेक हमरहु तँ कहु। मनोज ओही आफीसक कर्मचारी छल।

रेखा बजलीह-मनोज के हम की कहने छलियैन्ह।
बड़ा बाबू - सएह तँ हमहू कहैत छी, ओ गप्प कनेक हमरहु कहु।

रेखा अकचकाय लगलीह। ताबत् अन्य कर्मचारी सेहो जमा भ गेल आ रेखाक संगे व्यंग्य करए लागल। रेखा के बुझबा मे आबि गेल जे इ सब हमर बेजती करए चाहैत अछि आ ओहिठाम सँ अपना घर चल गेल। किछु दिनक बाद पता लागल जे रेखा आत्म हत्या क लेलक।

सुजाता बजलीह - की एहिठाम कोनो यूनियन नञि अछि।
कलाबती - हँ, रहत किएक नञि। यूनियन तँ अछि मुदा ओ नहिए रहैत तँ नीक छल।

सुजाता - से की।

कलाबती - ओ सरधुआ यूनियन केर नेता तँ आर दोगला अछि। हमरहि सभक चन्दा पर यूनियन चलैत अछि आ हमरहि सभक अहित करैत अछि। बिना ओकर इशारा पौने केओ अहाँ सँ बाजत नञि। ओकरहि पेटे तँ एहिठामक साहेब एतेक अनाचार करैत अछि। इ सब तँ कुकुर थीक। एकटा टुकड़ा फेकिं दैत अछि आ इ सब चाटैत रहैत अछि।एकर बिरोध जँ कोनो कर्मचारी करत तँ ओकर बदली करा देत वा ओकरा तंग करत। एहि डरे जे निको कर्मचारी अछि से अपन मुँह नञि खोलैत अछि।

सुजाता - तखन कोना की होएतैक।

कलाबाती - हम अहाँके इ सब करबाक लेल ने सलाह दऽ रहल छी आ ने विवस कए रहल छी। हम ककरहु एजेन्ट नञि छी आ अहाँ हमर बेटीक समान छी मुदा एकरा सभक मनोदशा के हम देखि रहल छी आ तें आग्रह कए रहल छी जे अहाँ घर जाउ आ नीक जकाँ बिचारि लिअ। जँ चौखटि के भीतर रहब तखन तँ कोनो बात नञि मुदा जँ बाहर आयब तखन तँ एकरा सभक इच्छाक पूर्त्ति करहि टा पड़त। एकरा छोड़ि दोसर कोनो उपाय नञि अछि। हमरा सँ जखन जे मदैत लेबए चाही, हम तैयार छी। कलाबतीक गप्प सुनि सुजाताक सौसे देह सिहरि उठल। ओ एहि सभक कल्पनो नञि कएने छलीह। चुपचाप घर एलीह आ एहि विषय मे सोचए लगलीह।

हुनका सोझां पंकज केर चेहरा नाचए लागल। आँखि सँ दहो-बहो नोर चूबि रहल छल। जाहि बाहु-पाश मे पंकज केर आलींगन करैत छलहु, पता नञि आब ककरा-ककरा करए पड़त आ से सोचिक सौसे देह सिहरि उठैत छलैक। कौखन सोचैत छलीह जे इ सब झमेला छोड़ि ककरहु उत्तराधिकारी बना दी। पुनः नेनमणि केर दुर्दशा मोन पड़ि जाइत छल। इ समाज जकरा दोसरक नीक नञि देखल जाइत अछि। दोसरक छेद दिन राति ताकैत रहैत अछि। ककरहु विषय मे झूठ-मूठ क कोनहु परोपगंडा उड़ा दैत अछि आ ताहु मे हम स्त्री जाति, जकरा आगु-पाछु केओ नञि। की इ समाज हमरा नीक जकाँ आ चैन सँ जिबए देत। कौखन मन मे आबए जे एहि गंञ्जन केर जिनगी सँ नीक आत्म हत्या करब होएत। तैखन मॉ आ बाबूजीक मुँह ऑखिक सोझां नाचए लागैत छल। हमरा बाद हनुका लोकनिक की होएतन्हि। एहि बुढ़ारी मे हुनकर सहारा के होएत। कतेक धरानी सँ हमर पालन-पोषण कएने छथि। की एहि बुढ़ारीक कनहा हमर लाशक बोझ उठा सकैत अछि। खेत-पथार तँ हमरहि विवाह मे बिकि गेल। हुनकर गुजर कोना कए होयत। उपर सँ हमर अभाव, कोना क इ सब बर्दास्त करताह। नञि, इ नञि भऽ सकैत अछि। हम अपन दुर्गति सहि सकैत छी मुदा मॉ-बाबूजीक दुर्दशा नञि देखि सकैत छी। हम एहि समाज सँ लड़ब आ लड़िक प्राण दऽ देव मुदा कायरतापूर्ण मृत्युक वरण कथमपि नञि करब। हम एहेन कोनो काज नञि करब जाहि सँ मॉ-बाबूजीक मूड़ी निचाँ होइन्हि। बहुत राति

धरि तर्क-वितर्क करैत नीन पड़ि गेलीह।

(10)

दोसर दिन सुजाता आफीस गेलीह आ सब सँ पहिने कलाबती केर भेंट केलन्हि। कलाबती बाजलि- अहाँ की बिचार कएल।

सुजाता बजलीह - जँ अहाँ मदैत करी तँ हम एकरा सभक पर्दाफास करब। हम अहाँ के बेटी मानैत छी। हमरा सँ निश्चिन्त रहु, जे मदैत अहाँ कें चाही से भेटत मुदा इ सब नीक लोक नञि अछि। एकर परिणाम खरापो भ सकैत अछि। एकरा सभक पहुँच उपर धरि अछि। कलावती बाजलि.....

सुजाता - तकर चिंता अहॉ नञि करू। हम कोनहु परिणाक लेल तैयार छी मुदा हम कोनहु हालत मे अपना कें एकरा सभक सोझां समर्पित नञि करब।

कलाबती - तखन हमरा की करए पड़त।

सुजाता - सब किछु तँ अहीं के करए पड़त। सब सँ पहिने एहन कर्मचारीक नाम कहु, जे एकरा सब सँ फराक विचार धाराक होमए। हम सब ओकरा मिला कए आगू बढ़ब।

कलाबती - हॅ, एकटा तँ अछि, धिरेन्द्र मुदा ओ तँ बड़ डेरबूक अछि। एकरा सभक डरे ओ कोनो मदैत नञि करत।

सुजाता - अहॉ ओकर चिन्ता नञि करु। इ कहु जे ओ

कतए रहैत अछि। कलाबती सुजाता के धिरेन्द्रक डेराक पता द देलक।

सुजाता संध्या काल धिरेन्द्रक डेरा पर पहुँचली। तावत् धिरेन्द्र आफीस सँ डेरा आयलो नञि छल आ से गप्प सुजाता के बुझल छल जे एखन धिरेन्द्र के डेरा एबाक समय नञि भेल अछि। ओ जानि बुझि कए धिरेन्द्र के अएबा सँ पहिने गेल छल। जाहि सँ ओकरा कनियाँ सँ सब गप्प शप्प क ओकर सहानुभूति पाबि धिरेन्द्र के मदैत करबाक लेल विवश क सकी। सएह भेल, यावत धिरेन्द्र डेरा आयल ओहि सँ पूर्व सुजाता धिरेन्द्र क कनियाँ सँ सब गप्प-शप्प कए ओकर सहानुभूति पाबि गेलीह।

धिरेन्द्र जखन आफीस सँ आयल तँ कपड़ा-लत्ता बदललाक बाद जलखै कऽकऽ चाह पिबए लागल तँ कनियाँ कहलथिन्ह-अहाँ सँ गप्प करबाक लेल सुजाता नामक एकटा महिला आयल छथि। धिरेन्द्र तँ महिलाक नामे सुनि क आ सेहो कनियाँक मुँह सँ हड़बड़ा गेलाह। पुनः कनियाँ बजलीह-एना अकचकाइत किएक छी। अहाँ दूनू एक दोसरक लेल अपरिचित छी। हुनका अहाँक आफीस मे किछु काज छैन्हि। ते अहाँक मदैत चाहैत छथिं जँ भ सकए तँ मदैत करियौन्ह।

धिरेन्द्र - कोन तरहक काज छैन्हि।

कनियाँ बजलीह - हम बजा दैत छी। स्वयं गप्प क लिअ।

कनियाँ उठिक भीतर गेलीह आ पुनः सुजाता संगे एलीह।

सुजाता धिरेन्द्रक कोठली मे कुर्सी पर बैसि गेलीह आ अपन पूर्ण वृतान्त सुनौलन्हि ।

धिरेन्द्र बजलाह-एहि मे हम अहाँ के किछु मदैत नञि क सकैत छी। इ सब फाइल नेता जी देखैत छथि। ओएह जे करताह से होएत। हम की, दोसर केओ नञि एहि में मदैत क सकैत अछि।

सुजाता-धिरेन्द्र बाबू! की अहाँ जनैत छी, जे नेताजीक की माँग अछि।

धिरेन्द्र-जी।

सुजाता-की, केओ सभ्य समाजक महिला ओकरा पूरा कऽ सकैत अछि।

धिरेन्द्र - नञि।

सुजाता - तखन भरमा बचबैत काज कोना भऽसकैत अछि।

हम इएह बुझबाक लेल एतए आयल छी। हमरा किछ आगूक बाट देखाउ।

धिरेन्द्र - एहिठाम सँ तँ काज होएब बड़ कठिन बुझना जाइत अछि। कारण एहिठाम तँ चंडाल चौखरी छैक। एकटा जे बाजत, सब ओकरहि समर्थन करत।

हम चाहिओ क ओकरा सभक बिरोध नञि क सकैत छी। हमरा स्वयं एकरा सभक व्यवहार नीक नञि लगैत अछि मुदा

के झंझट मे परओ। तखन अहाँ जँ साहस करी तँ मुख्य कार्मिक पदाधिकारी ओहिठाम पटना जाऽकऽ पैरबी करू, तँ किछ बात बनि सकैत अछि।

सुजाता - हुनका लग पहुँचबाक कोनो माध्यम। ओना तँ ओ हमरा टारिओ सकैत छथि। भऽ सकैत अछि जे परोक्ष रूपें एहि रैकेट मे हुनकहु समर्थन हो। धिरेन्द्र- भऽ सकैत अछि। ओ कनेक काल सोचए लगलाह आ पुनः बजलाह - हँ! एकटा उपाय अछि। जँ हुनका मेम साहेब के गप्प-शप्प सँ पटिया सकी आ ओ मदैत करबाक लेल तैयार भ जाथि तँ काज बनि सकैत अछि। किएक तँ मेम साहेब धार्मिक प्रवृत्ति केर छथि, जँ ओ बचन द देतीह तँ बुझू काज भ गेल। मुदा एकटा ध्यान राखब, इ गप्प कतहु खुजैक नञि चाही। गप्प खुजला सँ हमरो सभ के अनर्गल रूपे जोड़ि क बदनाम क सकैत अछि। एकर चिन्ता अपने जुनि करू, सुजाता बजलीह।

सुजाता - तखन आज्ञा देल जाउ। अपनेक आ अपनेक परिवारक बहुत समय हम व्यर्थ मे नष्ट कएल अछि। ई कोनो गप्प भेलैक। हम सब आर समय देबाक लेल तैयार छी। जाहि सँ अहाँ सफल भ सकी, धिरेन्द्र क कनियाँ बजलीह।

सुजाता धिरेन्द्र सँ मुख्य कार्मिक पदाधिकारीक डेराक पता लऽक धिरेन्द्र आ हुनका कनियाँ के धन्यवाद दैत अपना घर एलीह।

(11)

दोसर दिन सुजाता कलाबतीक संग योजनानुसार युनियन-आफीस गेलीह। नेता जी कलाबतीक संग नव शिकार के देखि बजलाह-आऊ आऊ कलाबती, आई बाट कोना बिसरि गेलहु। कलाबती व्यंग्य करैत-बाट तँ बिसरए चाहैत छी मुदा अहाँ लोकनि विसरए दी तखन ने?

नेता जी - एना नञि बाजू कलाबती। इ यूनियन आफीस तँ अही सभक अछि। अहीं सभक सहयोग पर चलि रहल अछि। सुजाता यूनियन आफीसक दृश्य देखि चकित छलीह। कमरा खूब सजल-धजल छल। टेबुल पर ढंग सँ किछु फाइल कलम, टेबुल घड़ी आ टेलीफोन राखल छल। कमराक दीवार पर क्रान्तिकारी नेता, जेना कार्ल मार्क्स, लेलिन, सुभाष चन्द्र बोस क संगे महात्मा गाँधीक फोटो टांगल छल । बीच-बीच मे नेताजी टेलीफोन सँ सेहो गप्प करैत छलाह। कौखन नरम आ कौखन गरम गप्प-शप्प होइत छल। टेलीफोन रखलाक बाद नेताजी बजलाह-कलाबती कोमहर आयल छी, की सेवा कएल जाय। कलाबती-इ सुजाता छथि। हिनकर बहाली बला फाइल अहाँ लग अछि। ओहि सम्बन्ध के किछु गप्प करबाक अछि। नेताजी - हँ-हँ, हम हिनके फाइल देखि रहल छलहु। ओहि मे किछु कागजातक कमी अछि।

सुजाता बजलीह - कागज तँ हम सब जमा क देने छी।

नेता जी - किछ कागज एखनहु फाइल मे नञि अछि। इ काज एतेक आसान नञि छैक। बहुत सावधानी सँ फाइल तैयार

करए पड़ैत छैक, मुदा अहाँ भेंट करबा मे बहुत देरी क देल। एखन धरि तँ सब काज भ गेल रहैत आ एक मासक बाद तँ एकर तमादी भ जायत। पंकज बड़ नीक कर्मचारी छलाह मुदा की करबैक, भावी तँ प्रबल होइत अछि। ओहि पर ककरहु वश नञि चलैत अछि। रमाकान्त बाबू अहाँक ससुर छथि ने?

सुजाता - जी हँ।

नेता जी - छः मास सँ हमरा परेशान कएने छथि, जे कहुना क हमरा पोता के नौकरी दिआ दिअ। जे टाका खर्च होएत से हम करब मुदा हम स्पष्ट कहलियैन्ह जे इ बात नञि भ सकैत अछि। सुजाता जँ चाहथि तँ भ सकैत अछि। ओ एक लाख टाका दैत छलाह। साहेब सेहो मानि गेल छलाह मुदा हम अड़ि गेलहु। आखिर हमहू तँ यूनियन केर नेता छी। हमर कर्त्तव्य अछि कर्मचारीक मदैत करब आ कर्मचारीक परिवारक संगे केओ धोखा करत से हम कोना होमए देबै। ओ सबटा फर्जी कागज-पत्र देखौलनि। कागज देखिते हम कहन्लियैन्ह इ सबटा फर्जी अछि। साहेब बजलाह-से कोना? तखन हम अहाँक फाइल सँ कागज निकालि देखौलियैन्हि। रमाकान्तक कागज में सबटा नकली दस्तखत छल। साहेब हमरा संकेत केलन्हि जे फाइल सँ असली कागज के हटा क नकली राखि दिऔक मुदा हम कललियैन्ह इ नञि भ सकैत अछि। यूनियन कर्मचारीक हक दिआब लेल बनल अछि, नञि कि ओकर हक मारबाक लेल। तखन जाऽ क बात खतम भेल आ रमाकान्त जी सेहो हमरा सँ रूष्ट भ गेलाह।

हलांकि रमाकान्त बाबू अपना पोताक नौकरीक लेल प्रयास कएने रहथि वा नञि से तँ कहि नञि सकैत छी, मुदा नेता सब अपना झांसा मे आनैक लेल एहि तरहक खिस्सा गढ़िक पट्टी पढ़बैत अछि आ अपना चंगुल मे फंसाबैत अछि। पुनः नेताजी बजलाह-एतेक देरी किएक भेल। सुजाता बजलीह - हम तँ एक वरष सँ दौड़ि रहल छी। कतहु कोनहु टेरे नञि लागैत छल। तखन कलाबती चाची सँ भेट भेल आ ओ अपनेक सम्बन्ध मे सब किछ कहलन्हि।

नेताजी - इ सब पाजी अछि। बिना खुर पूजाई के थोरहि किछु सुनैत अछि। अहीक लेल ने यूनियन बनल अछि। जँ इ सब आसानी सँ काज करैत, तखन यूनियन केर की आवश्यकता छलैक। खैर छोड़ू एहि बात के। आब अहाँ उचित स्थान पर आबि गेल छी। सब काज भऽ जायत । कनेक साहेब सँ गप्प करैत छी। टेलीफोन पर साहेब सँ गप्प केलाक बाद नेताजी बजलाह- बीस हजार टाका लऽक साहेब बजौने छथि आ हुनका सँ भेट सेहो करबाक अछि। एहि सम्बन्ध मे कलाबती अहाँ के बुझा देतीह।

सुजाता बजलीह - हमरा कलाबती सब किछु बुझा देने छथि। हम तैयार छी, मुदा टाकाक जोगार मे हमरा पन्द्रह दिनक समय चाही। तावत् अपने बहाली बला कागज तैयार करू।

नेताजी - अहाँ चिन्ता किएक करैत छी। सब काज पलक झपकाबैत भ जायत। कंचन आ कामिनि लग कोनहु काज

असम्भव नञि अछि।

दोसर दिन सुजाता कलाबतीक संग कार्मिक पदाधिकारीक कक्ष मे गेलीह। पहिने तँ सुजाता कें देखि साहेब हड़बड़ा गेलाह, फेर संयमित होइत बजलाह-की काज अछि?

सुजाता सब वृत्तान्त कहलथिन्ह।

साहेब बजलाह - काल्हि सांझ मे तँ अहींक सम्बन्ध मे नेता जी सँ गप्प भेल छल। तखन हमरा लग एबाक प्रयोजन। हम तँ हुनका ग्रीन सिगनल द देने छलियन्हि।

सुजाता - श्रीमान्। हम गरीब-बेरोजगार एतेक टाका कतए सँ द सकैत छी।

साहेब-आइ-काल्हि केर युग मे बीस हजार टाका तँ वेशी नञि भेलैक आ हमरहु सब के उपर धरि टाका पहुँचाबए पड़ैत अछि।

सुजाता - बीस हजार?

साहेब - हँ, बीस हजार।

सुजाता - मुदा नेताजी तँ हमरा सँ तीस हजारक माँग कएने छथि आ तें हम श्रीमान् क शरण मे आयल छी।

साहेब - नञि, नञि, अहाँ के सुनबा मे धोखा भेल होएत। हमरा तँ बीस हजार सुनौलन्हि।

सुजाता - नञि श्रीमान्, हमरा संगे कलाबती सेहो छलीह

साहेब - की कलाबती?

कलाबती - जी श्रीमान्, हम हू तँ सएह सुनल।

साहेब कलाबती सँ बजलाह - कनेक नेता जी के बजाउ तँ।

कलाबती कक्ष सँ बाहर गेलीह आ नेता जीक संगे पुनः एलीह।

साहेब - नेता जी, अहाँ हमरहु संग चालि चलैत छी। बाजैत छी किछु आ करैत छी किछु।

नेताजी - की भेल श्रीमान्।

साहेब - अहाँ सुजाता सँ कतेक टाका मँगने छलहु?

नेता जी - बीस हजार।

साहेब - मुदा सुजाता तँ कहैत छथि, तीस हजार। की सुजाता? जी श्रीमान् सुजाता बजलीह।

नेताजी - जी नञि श्रीमान्। भऽ सकैत अछि जे हिनका सुनवा मे धोखा भेल हेतैन्ह।

साहेब - हिनका सुनवा मे धोखा भेल हेतैन्ह आ कि अहाँ हमरा धोखा द रहल छी। हम अहाँ पर आँखि मूनि क भरोष करैत छलहु, तकर इ पराभव। साहेब एकदम बिगरि गेलाह आ

नेताजी कें आफीस सँ बाहर जेबाक लेल कहि देलन्हि।

सुजाता आ कलाबती सेहो बाहर चल एली।

(12)

सुजाता धिरेन्द्र सँ मुख्य कार्मिक पदाधिकारीक पता लऽक हुनका सँ भेट करबाक लेल ट्रेन सँ पटना विदा भेलीह। ट्रेन में सुजाता मुख्य कार्मिक पदाधिकारी जिनका सब बड़ा साहेब कहैत छल, के बारे मे सोचि रहल छलीह। बड़ा साहेब केहन स्वभावक होएताह, ढ़ंग सँ गप्प करताह की नञि। काज होएत की नञि होएत। खैर, बड़ा साहेब केहनो होथि, जँ मेम साहेब केर मन जीति लेब तँ बड़ा साहेब लग पहुँचब आसान भ सकैत अछि। ते कोनो ने कोनो तरहें मेम साहेब केर मन जितब आवश्यक अछि। इएह गुन-धुन करैत सुजाता पटना पहुँचि गेलीह। ट्रेन सँ उतरि रिक्सा सँ बड़ा साहेब केर डेरा पर गेलीह। डेरा खूब आलीशान छल। डेराक आगू हाता मे रंग-विरंगक फूल-पत्ती लागल छल। बड़ा साहेब केर मात्र दू टा बेटा छल जे दिल्ली मे पढ़ैत छल। एहिठाम दू प्राणी आ एकटा नौकर जे सम्भवत: आफीसक चपरासी छल, मात्र तीन आदमी डेरा मे रहैत छल। सुजाता चपरासी सँ बड़ा साहेब केर सम्बन्ध मे पता केलक तँ चपरासी सँ पता लागल जे बड़ा साहेब आफीस गेल छलाह आ सुजाता सेहो तँ सएह चाहैत छल जे बड़ा साहेब के गैर हाजिरी मे पहिने मेम साहेब सँ गप्प करी। सुजाता चपरासी सँ बजलीह - हम कनेक मेम साहेब सँ भेट करए चाहैत छी।

चपरासी पूछलक जे अहाँक नाम की थीक आ कतए सँ आयल छी।

सुजाता बजलीह - हमर नाम सुजाता अछि आ हम मधेपुर सँ आयल छी।

चपरासी भीतर गेल आ मेम साहेब सँ बाजल - मेम साहेब मधेपुर सँ एकटा सुजाता नामक स्त्री आयल छथि आ अपने सँ भेंट करए चाहैत छथि।

मेम सेहेब भीतर सँ बाहर एलीह आ पूछलन्हि - अहाँ के थिकहु आ की प्रयोजन अछि।

सुजाता पैर छूबि मेम सेहेब के गोर लगैत बजलीह- हम एक अभागिन छी आ हमर नाम सुजाता अछि। हम अपनेक शरण मे आयल छी। हमरा अपनेक सहारा चाही। मेम सेहेब - हम किछु नञि बुझलहु, कनेक फरिछाक कहु? सुजाता आँखि मे नोर भरने सविस्तार पूरा खिस्सा सुना देलन्हि जे कोन तरहें कार्मिक पदाधिकारी, नेता आ हुनका आफीसक लोक सुजाता के तंग क रहल अछि आ ओकरा सँ की अपेक्षा करैत अछि। ओकरा लाज बचाएब कठिन भ गेल छैक

मेम सेहेब सेहो सुजाताक दु:ख सँ द्रवित भ गेलीह। मेम सेहेब तँ धार्मिक प्रवृत्तिक छलीहे। हुनका सुजाताक गप्प आर झकझोरि देलक। एक स्त्रीए दोसर स्त्रीक दु:ख बुझि सकैत अछि। कहबिओ छैक जे बाँझ की जानए प्रसव के पीड़ा। सुजाताक अनुमान सँ वेशी मेम सेहेब के सुजाताक गप्प प्रभावित

कएलक। ओ बजलीह-अहॉ कोनहु चिंता नञि करू। अहॉ उचित स्थान पर आबि गेल छी। आब अहॉक लाजो बॉचत आ सब दु:ख सेहो दूर भ जायत। सांझ मे सेहेब आबैत छथि तँ हम हुनका सँ गप्प करैत छी।

सुजाता जेबाक लेल आपस भेलीह तँ पुन: मेम सेहेब बजलीह अहॉ कतए जा रहल छी। केओ सम्बन्धी एहिठाम छथि की, कतए ठहरल छी।

सुजाता - नञि, माँजी, एहिठाम केओ सम्बन्धी नञि छथि। हम तँ एखनहि ट्रेन सँ उतरि क आयल छी।

मेम साहेब- वाह! माँ जी सेहो कहैत छी आ चुपचाप ससरि रहल छी। अहॉ तँ भोरहि सँ किछु खएने पीने नञि होएब।

सुजाता किछु नञि बजलीह

मेम सेहेब सुजाता के भीतर लऽ गेलीह आ चपरासी सँ बजलीह- रौ मँगनू, किछ खेनाई- पिनाईबाँचल छौक?

मंगनू - हॅ, माँ जी, बाँचल छैक।

मेम सेहेब - दहुन तँ सुजाता के खएबाक लेल।

सुजाता - छोरू ने माँजी, हम कतहु किछु खा लेब।

मेम सेहेब - वाह! इ कोनो गप्प भेलैक। मॉ क ओहिठाम सँ बेटी कतहु भुखल गेल अछि आ दोसर गप्प जे अहॉ जायब कतए। की एहि घर पर हमरा बेटीक अधिकार नञि। तावत

मंगनू भोजन लऽ क सुजाताक आगू राखि देलक सुजाता के मेम सेहेब केर स्नेह देखि क बकोर लागि गेल। ओ सोचए लगलीह, एखनहु धरती पर एहन लोक छथि, जे दोसराक दु:ख बाँटैत छथि।

मेम सेहेब - किएक कनैत छी सुजाता! हम अहॉके कहलहु ने, जे सब काज भ जायत। हमरा बेटी के जे कष्ट देत ओकर जिअब दूभर क देबैक। अहाँ भोजन कऽ क आराम करू। कोनो बातक चिन्ता जुनि करू।

बड़ा सेहेब जखन आफीस सँ एलाह तँ जलखै केलाक बाद मेम सेहेब बजलीह-सुनै छी! अहॉ तँ हमरा मात्र दू टा बेटा देने छी मुदा हम अहॉ के एकटा बेटी सेहो द रहल छी। बड़ा सेहेब बात बुझि नञि सकलाह आ अकचकाइत बजलाह - की बाजैत छी।

मेम सेहेब - अहाँक मधेपुरक आफीस मे कोन-कोन लीला भ रहल अछि, अहाँ के पता अछि।

बड़ा सेहेब - की भ रहल अछि आ से अहॉ कोना बुझलियैक। मेम सेहेब सुजाता के आवाज देलन्हि। सुजाता आबि गेलीह। बड़ा सेहेब - इ के छथि आ हिनका किएक बजौलियन्हि। मेम सेहेब - इएह हमर बेटी छथि सुजाता। हिनकहि सँ पता लागल। हिनका संगे अहॉक आफीसक लोक की कए रहल छन्हि आ सविस्तार सब वृत्तान्त बड़ा सेहेब के सुना देलथिन्ह। बड़ा सेहेब कार्मिक पदाधिकारी पर बिगड़ि उठलाह

आ बजलाह - ठीक छै, हम देखैत छी। हम एखनहि टेलीफोन पर ओकरा सँ गप्प करैत छी।

सुजाता बजलीह - ओना तँ अहाँ हमर पिताक समान छी आ हुनकर अधिकारी। हुनका सँ गप्प करब अहॉक अधिकार अछि आ हम ओहि मे दखल देमए नञि चाहैत छी मुदा एखन टेलीफोन सँ गप्प केला सँ काज बिगड़ि सकैत अछि। ओ उनटा-पुनटा अहॉ के जबाब द सकैत अछि। ओ हमरा विरूद्ध सबटा कागज-पत्र तैयार क सकैत अछि। तरह-तरह के आपत्ति क सकैत अछि। बड़ा सेहेब सेहो सुजाताक तर्क सँ प्रभावित भेलाह आ बजलाह-इ तँ भ सकैत अछि। तखन कोना की कएल जाय।

सुजाता - हम ओकरहि सभक योजनानुसार काज करैत छी। ओ हमरा होटल लऽ जायत, तखन अहॉ ओहिठाम पहुँचि जाई। तखनहि ओकरा सभक पर्दाफास होयत।

बड़ा सेहेब - ठीक छै! अहॉक बिचार हमरा नीक लागल मुदा एकर सूचना हमरा कोना भेटत। हम इ बात कोना बुझबैक जे कोन होटल मे आ कोन समय मे हमरा पहुँचक चाही। सुजाता - ओकर चिन्ता अहॉ नञि करू। हम अहाँ के एक दिन पूर्व टेलीफोन क देब। अहाँ करीब छः बजे मधेपुर आफीस आबि जायब।

बड़ा सेहेब - आफीस तँ पाँचे बजे बन्द भ जाइत अछि। हम छः बजे जाऽ क की करब। ओहिठाम तँ छः बजे ककरहु सँ

भेटो नञि होयत।

सुजाता - पाँच बजे आफीस बन्द भ जाइत अछि, ते तँ अपने के छः बजे बजा रहल छी। ओहिठम आफीसक बाहर मे अहाँक प्रतीक्षा कलाबती नामक एकटा चपरासी करतीह। ओहो हमरहि मंडलीक लोक छथि। अपने ओकरहि संगे गणतव्य स्थान पर पहुँचि जायब। बड़ा सेहेब - ठीक छै। अहूँ कनेक होशियारी सँ काज करब आ हम अहॉक टेलीफोनक प्रतिक्षा करब। गप्पक क्रम मे बड़ा सेहेब सुजाता सँ पूछलन्हि जे अहॉ के हमर पता के देलक। जखन कि ओहि आफीस मे अहाँ के केओ मदैत नञि करैत अछि।

सुजाता बजलीह - ओही आफीस मे धिरेन्द्र नामक एकटा कर्मचारी छथि। ओ स्वभाव आ बात विचार मे अन्य कर्मचारी सँ फराक छथि मुदा डरे किछु नञि बाजैत छथि। हम हुनकहि सँ जेना-तेना अपनेक पता लेल। ओ इहो बजलाह - जे एहि गप्प के गुप्त रखब।

गप्प - शप्प भेलाक बाद सब केओ एकेठाम बैसि भोजन कएलन्हि। मेम सेहेब सुजाता के पूछि-पूछि के खोऔलन्हि, जेना कोनो माँ अपना अबोध बच्चा के खुआबैत अछि। भोजनो परान्त सब केओ आराम करबाक लेल गेलाह। सुजाता सेहो राति मे ओतहि आराम केलनिह। ओ अपना सफलता पर अत्यन्त गर्वित छलीह। प्रातः काल जखन सुजाता गाम एबाक लेल तैयार भेलीह तँ मेम सेहेब बजलीह बेटी एहि मॉ के बिसरब नञि। यदा-कदा भेट दैत रहब आ ओहिठामक सब वृतान्त

टेलीफोन सँ कहैत रहब। मेम सेहेब के प्रेम आ स्नेह देखि सुजाता हुनका चरण पर खसि पड़लीह। मेम सेहेब सेहो भाव विहब्ल भ गेलीह।

(13)

आफीस मे एक दिन सुजाताक भेट सुनीता सँ भेल। सुनीता लाल दाईक पुतौह छलीह। लाल दाई के एकेटा बेटा छल जे ओही आफीस मे काज करैत छल। ओकरा असाध्य रोग भ गेल छल। बहुत उपचार कएलाक बादो रोग ठीक नञि भेल आ ओ काल कबलित भ गेलाह। बेटाक मृत्युक तीन मासक बाद लाल दाईक पति सेहो, ओ सोग बर्दास्त नञि क सकलाह आ मृत्युक अधीन भ गेलाह। एहि तरहे सासु आ पुतौह दूनू बिधबा भ गेलीह। सुनीता के पाँच वरषक एकटा बेटा छल। जकरा देखिक सब संतोष करैत छल। बिधवा भ गेलाक बाद लाल दाई मे बड़ बदलाव आबि गेल अछि। बजबाक ओ पहिला शैली खतम भ गेल। बहुत कम बाजैत छथि। पहिने तँ हुनका सँ लोक गप्पो करबा सँ डरैत छल। कखन ककरा भुस्सा थैर बैसा देतीह, केओ नै जनैत छल। मुदा आब ओ बात नञि रहल। एक बेर सुजाता के सेहो अनाप-शनाप कहि देने छलीह, जे सुजाताक लेल प्रेरणा दायक भ गेल आ एहि समाज सँ लड़बाक लेल ओकरा दृढ़ शक्ति प्रदान कएलाक। तें आब सुजाता के सेहो लाल दाई सँ कोनो परहेज नञि छल। आब सुजाता सेहो ओ सुजाता नञि रहलीह। निर्णय लेबा मे आ उचित अनुचितक विचार करबा मे सेहो निपुण भ गेल छलीह। समाजक रंग-ढंग

सँ सेहो परिचित छलीह। केओ किछ बाजैतो छल तँ ओहि पर ध्यान नञि दऽ अपन कर्त्तव्यक पथ पर निरंतर चलैत छलीह। ओ बुझैत छलीह जे ककरहु सँ उलझला सँ व्यर्थ मे समय नष्ट होयत।

सुजाता, सुनीता सँ हुनका काजक सम्बन्ध मे पूछलन्हि, तँ सुनीता बजलीह - छः मास सँ दौड़ि रहल छी, मुदा केओ सोझ मुँहे गप्पो नञि करैत अछि।

सुजाता - हम तँ एक बरष सँ दौड़ि रहल छी, मुदा एखन धरि किछु नञि भेल अछि।

सुनीता - बहिन! तखन कोना की हेतैक।

सुजाता - अहाँ के बुझल अछि, जे एहिठाम काज कोना होइत छैक।

सुनीता - नञि।

सुजाता - एहिठाम बीस हजार टाका आ अपन इज्जति देलाक बादे काज होइत छैक। की ! अहाँ इ क सकैत छी। सुजाताक गप्प सुनि सुनीताक सौसे देह रोमांचित भ गेल, ओ बजलीह - हम नौकरी नञि करब मुदा इ काज हमरा सँ नञि होएत।

सुनीता निरास भ गेलीह।

सुजाता - एकटा आर उपाय अछि।

सुनीता - से की?

सुजाता - अहाँ हमरा जेर मे मिलि जाउ। जेना-जेना हम कहैत छी, से करू तँ दूनू चीज सँ बाँचि सकैत छी आ काजो भ जायत।

सुनीता - हम तैयार छी। अहाँ जे-जे कहब, हम से-से करब।

सुजाता - एकटा गप्प आर

सुनीता - की।

सुजाता - इ गप्प कतहु नञि बाजब। नञि तँ काज गड़बड़ा सकैत अछि।

सुनीता - ठीक छै।

सुनीता अपन घर चल गेलीह। हुनका सुजाता क गप्प सँ हर्ष आ विस्मय दूनू भेल। विस्मय एहि लेल भेल, जे नौकरीक प्रक्रिया बड़ खराप लागल आ हर्ष एहि लेल भेल जे एहि विषय परिस्थिति मे सुजाताक सहारा भेटि गेल।

सुनीता जखन आँगन गेलीह तँ लाल दाई जिज्ञासा रूपे दिन-चर्चाक सम्बन्ध मे पूछ-ताछ केलनि। आई कोना की काज भेल।

सुनीता सविस्तार सुजाताक संग भेल गप्प हुनका सुना देलथिन्ह। लाल दाई के बड़ आश्चर्य भेलनि। ओ स्वयं एक दिन सुजाता के अपमान कएने छलीह। ओकरा बैधव्य पर क्रूर

प्रहार कएने छलीह। ओ दर्द लालदाई आइ महसूस कए रहल छथि। किएक तँ ओ दूनू सासु-पुतौह आई बिधवा छथि। मुदा सुजाता तँ महान अछि ओ लाल दाईक गप्प पर ध्यान नञि द आई ओकरा पुतौह के मदति करबाक आश्वासन देलक अछि। आई लाल दाई कें अपना व्यवहार पर बड़ दु:ख भेलन्हि। ओ भिनसरे-भिनसर सुजाताक ऑगन गेलीह, सुजाता आ सुजाताक माय हुनकर खूब आदर केलथिन्ह। लाल दाई बजलीह - भौजी, हम तँ सुजाता बेटी सँ आई माँफी मँगबाक लेल आयल छी। किछु दिन पूर्व हम हिनका लाल काकीक ऑगन मे विवाहक अवसर पर किछु एहेन गप्प बाजि देलियन्हि जे हमरा नञि बाजक चाही आ ते हम हुनका सँ माँफी माँगए आयल छी। सुजाता महान अछि। इ जँ चाहैत तँ हमरा पुतोह के वर्बाद होएबाक लेल छोड़ि सकैत छल मुदा इ ओकरा बचा लेलक। हम सुजाताक महानता के चिन्हि नञि सकलहु। हम तँ अहु लायक नञि छी जे मॉफी मॉगि सकी। सुजाता - दीदी! इ अहाँ की बाजैत छी। अहाँ हमरा सँ कतेक पैघ छी आ हमरा सँ मॉफी माँगैत छी। हमरा पाप किएक चढ़बैत छी। सुजाताक माय लाल आई के चाह पिऔलन्हि। लाल दाई बजलीह - मौजी! सुजाता अहॉक बेटी नञि, बेटा थीक। जँ बेटो रहैत तँ एतेक होशियार होइत वा नञि, कहि नञि सकैत छी। जे लालदाई काल्हि धरि सुजाताक सम्बन्ध मे तरह-तरह के प्रोपगंडा करैत छलीह, आई सौसे गाम मे हुनकर गुणनगान करए लगलीह आ लालदाई जकर गुणगान करतीह ओकर निंदाकेओ नञि क सकैत अछि।

सुजाताक योजनानुसार सुनीता कार्मिक पदाधिकारीक डेरा पर गेलीह आ हुनकर कनियाँ कमला सँ भेंट कएलन्हि। सुनीता के एहेन लागल जे ओ एहि सँ पूर्व सेहो कमला के कतहु देखने छथि आ कमला सेहो एहने प्रश्न केलन्हि । अहाँके कतहु देखने छी, कमला बजलीह। सुनीता के मोन पड़ल जे मिडिल स्कूल मे दूनू एके संग पढ़ैत छलीह। बाद मे कमलाक पिताक बदली दोसर शहर मे भ गेलाक कारण कमला के ओ स्कूल छोड़ए पड़ल। फेर तँ दूनू गोटेकेँ बहुत राश गप्प-शप्प भेल।

सुनीता - सुनऽ हम कथी लेल आयल छी से बुझलह।

कमला - नञि।

सुजाता - तों केहेन हमर संगी छह जे तोरा सँ अपना दुल्हो के सम्हारल नञि होइत छहु।

कमला -(हँसैत) से की, तोरहु तंग करैत छथुन्ह की?

सुनीता - जँ हमरहि करितथि, तखन तँ कोनहु बात नञि। हम तँ एक तरहे हुनकर सारिये भेलहु। मुदा ओ तँ.....

कमला - मुदा ओ तँ..... की कहए चाहैत छह। साफ-साफ कहऽ सुनीता - से की, तोरा किछु नञि बुझल छह। ओ राति-राति भरि कतए रहैत छथुन्ह।

कमला - नञि हमरा तँ किछु नञि बुझल अछि। हँ ओ कहिओ काल राति क देरी सँ अबैत छथि आ पूछला पर बाजैत छथि, आई आफीस मे बहुत काज छलैक।

सुनीता - ओ आफीसक बहाना सँ राति-राति भरि होटल मे रंगरेली मनाबैत छथुन्ह।जे कोनो बिधवा नौकरीक लेल हुनका आफीस जाइत अछि। ओकरा नौकरी लेबाक बदला अपन इज्जति लुटाबए पड़ैत अछि।तखन नौकरी भेटैत अछि आ हमहू ओहि आफीस मे पतिक स्थान पर नौकरीक लेल प्रत्यासी छी। भऽ सकैत अछि जे हमरो ओही बाटे गुजरए पड़ए।

कमला - ऐं! हमरा सँ एतेक पैघ धोखा। आई आबए दहुन तँ। हमरा मे कोन बातक कमी अछि जे इ हमरा छोड़िकए बौआयल फिरैत छथि। आई हम सब दशा पुरा दैत छियन्हि।

सुनीता - बहिन, एतेक अगुताबह जुनि। पुरूष आ तितली केर स्वभावे होइत अछि, एक फूल सँ दोसर फूल पर जएबाक। तों जँ विशेष सुगन्ध देबहुन्ह, तैंखन दोसर दिश नञि तकथुन्ह। तखन हमहू तँ दोसरेक मुँहे सुनल गप्प कहैत छियहु।

यावत् अपना आँखि सँ देखि नञि लएह, तावत् किछु करब उचित नञि।

कमला - हम कोना कऽ अपना आँखि सँ देखब?

सुनीता - किछु दिनक बाद सुजाता के नौकरी भेटए बला छैक। ओ सब नौकरी देवा सँ पूर्व ओकरा लऽक होटल जएताह आ सब बिंध - बाध भेलाक बादे ओकरा नौकरी देल जायत। हम सब बातक पता लगा क तोरा कहबह आ तौ अपना आँखि सँ सब लीला देखि लीहऽ।

कमला - ठीक छै। हम तोहर बड़ आभारी छी जे समय पर हमर आँखि खोलि देलह।

सुनीता - एहि मे आभारीक कोनो गप्प नञि छैक। एक संगीक नाते हमरहु तँ किछु कर्त्तव्य अछि मुदा एखन भूलो सँ इ गप्प ठोर पर नञि अनिहऽ। नञि तँ सबटा खेल बिगड़ि सकैत अछि आ तहूँ किछु बुझि नञि पएबह।

कमला - ठीक छै।

सुजाता संध्या काल यूनियन आफीस गेलीह आ नेताजी के भेंट केलन्हि।

सुजाता - नेताजी! हमरा काज के की भेल।

नेताजी - नौकरी तँ अहॉक राखल अछिं अहॉ जखन चाही भेटि जायत। देरी तँ अहीक दिश सँ अछि।

सुजाता - हमरा किछ टाकाक जोगार नञि भेल छल। आई-काल्हि बेरोजगार कें के टाका देमए चाहैत अछि। पन्द्रह हजारक जोगार तँ भ चुकल अछि। बाँकी पाँच हजार काल्हि भेटि जायत।

नेताजी - ठीक छै, तखन काल्हि आऊ।

सुजाता - नेताजी, ऐहेन कोनो उपाय नञि अछि, जे बिना होटल गेनहि काज भऽ सकए।

नेताजी - देखु सुजाता, हम अहॉक दर्द बुझैत छी मुदा इ

सेहेब बड़ पाजी अछि। जँ होटल बला प्रक्रिया पूरा नञि करब तँ ततेक फाइल के उलझा देत, काज होएब कठिन भ जायत।

सुजाता बुझैत छलीह जे नेता सेहेब केर दलाल अछि आ एहि कुकर्म मे ओकरहु बराबरि केर हिस्सेदारी अछि मुदा ओहो तँ भूमिका तैयार क रहल छलीह। जाहि सँ हुनका योजना केर सम्बन्ध मे ककरहु संदेह नहि होमए।

सुजाता - हमरा सबटा कागज-पत्र होटले मे भेटि जएबाक चाही।

नेताजी - सब ओतहि भेटि जाएत। हम सब बातक बड़ पक्का छी। सुजाता - से तँ हम जनैत छी। कनेक सेहेब सँ सेहो गप्प क लेल जाऊ।

नेताजी - सेहेब के जखन कहबनि ओ तैयारे छथि।

हुनकर चिन्ता अहॉ जुनि करु।

सुजाता - गप्प कऽ लितहु तँ नीक रहैत। एहेन नञि होमए जे हम तैयार भऽ क आबी आ साहेब के कोनो आवश्यक काज उपस्थित भ जाइन्ह।

नेताजी - ठीक छै, हम गप्प क लैत छी आ टेलीफोन उठा क नेताजी साहेब सँ गप्प करए लगलाह। टेलीफोन रखलाक बाद नेता जी बजलाह - साहेब तैयार छथि।

सुजाता - तखन हमरा कखन आ कतए आबैक लेल कहैत छी।

नेताजी - अहाँ ठीक सात बजे आफीस लग आबि जाऊ। हम ओहिठाम सँ अहाँके संग क लेब।

सुजाता - ठीक छै, तखन चलैत छी आ उठिकऽ चलि गेलीह।

सुजाता आबि कए पटना मुख्य कार्मिक पदाधिकारी के डेरा पर टेलीफोन केलन्हि। टेलीफोन मेम साहेब उठौलन्हि।

मेम सेहेब- के?

सुजाता - हम सुजाता बाजि रहल छी, माँ जी। गोर लगैत छी। मेम सेहेब - नीके रहु। की हाल-चाल।

सुजाता - जी, सब ठीक-ठाक अछि। कनेक बाबू जी सँ गप्प करए चाहैत छलहु।

मेम सेहेब - ओ तँ एखन धरि आफीस सँ नञि आयल छथि। तखन की कहबाक अछि, से कहू, हम औताह तँ कहि देबैन्हि।

सुजाता - काल्हि साढ़े सात बजे बाबूजी के मधेपुर आफीस एबाक छन्हि। एहिठाम सब जोगार फीट छैक। मेम सेहेब -ठीक छै, हम कहि देबैन्ह।अहाँ होशियारी सँ सब काज करब ।बड़ा साहेब जखन आफीस सँ डेरा एलाह तँ मेम साहेब कहलथिन्ह-सुनै छी!बेटीक फोन आयल छल।बड़ा साहेब-बेटी?मेम साहेब- अहाँ एतेक जल्दी बिसरि जाइत छी। एतेकटा आफीस अहाँ कोनाक क चलबैत छी?

बड़ा सेहेब - साफ-साफ कहू ने! ध्यान पर नञि अबैत अछि।

मेम सेहेब - अरे, मधेपुर सँ सुजाता केर।

बड़ा साहेब - ओ..... की कहैत छलीह।

मेम सेहेब - काल्हि साढ़े सात बजे मधेपुर आफीस मे बजौने अछि।

बड़ा साहेब - ठीक छै।

दोसर दिन सुजाता कलाबती आ सुनीता के अपना योजनानुसार सब गप्प कहलन्हि। कलाबती के सात बजे सँ आफीस लग रहबाक लेल आ सुनीता के साढ़े सात बजे कमलाक संग एबाक लेल कहलन्हि। बड़ा साहेब सेहो साढ़े सात बजे औताह। गाड़ी रूकत तँ अहाँ गाड़ी लग चल जायब। ओ स्वयं पूछताछ अहाँ कलाबती छी। तखन अहाँ बुझि जायब जे ओ बड़ा साहेब छथि आ सब के लऽक अहाँ होटल मे पहुँचि जायब। ओकर बाद सुनीता कमराक पता लगाक सब के लऽक कमरा मे पहुँचि जएतीह। सुजाता के तँ अपनहु पता नञि छल जे ओ कतए जा रहल अछि मुदा कलाबती के सब जगह देखल-सुनल छल।

संध्याकाल सात बजे सुजाता आफीस लग ठाढ़ि रहथि, कि एकटा टेम्पू रूकल आ ओहि टैम्पू सँ आवाज आयल सुजाता जी। सुजाता आबाज सँ बुझि गेलीह। ओ आबाज नेताजीक

छल। सुजाता टैम्पू पर सबार भ गेलीह। टैम्पू सड़क पर दौड़ए लागल। टैम्पू शहर क अन्तिम छोड़ पर रूकल। ओतए एकटा भव्य होटल। नेताजी आ सुजाता टैम्पू सँ आयल छलीह। कार्मिक पदाधिकारी एकसरहि अपना गाड़ी सँ आयल छलाह। ओ पहिनहि सँ कमरा बुक करबाए ओहि मे नेता आ सुजाताक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। टेबुल पर सुजाताक फाइल राखल छल। फाइलक बगल मे शराबक टूटा बोतल आ तीन टा खाली ग्लास सेहो राखल छल। भीतर सँ केबाड़ खुजले छल। नेता जी आ सुजाता सीधे ओहि कमरा मे घुसि गेलीह। सुजाता जाऽक पलंग पर बैसि गेलीह आ नेता जी सेहेब केर बगल मे बैसि फाइल देखए लगलाह। ओकर बाद दूनू गोटे पीबाक तैयारी करए लगलाह। सुजाता के सेहो पीबाक लेल बहुत आग्रह कएल गेल मुदा सुजाता पियब सँ मना क देलन्हि।

सुजाता के नेता जीक संग जाइत कलाबती देखि नेने छलीह। ओ आगुक योजना लेल सजग भ गेलीह आ बड़ा साहेब के एबाक प्रतीक्षा क रहल छलीह। ठीक साढ़े सात बजे एकटा कार आबिक आफीस लग रूकल। कलाबती ओहि कार लग गेलीह। कार मे बैसल साहेब पूछलन्हि-अहाँ कलाबती छी?

कलाबती - जी श्रीमान् आ अपने बड़ा साहेब

बड़ा साहेब - हँ। तखन चलु, कतए चलबाक अछि।

कलाबती - पाँच मिनट श्रीमान् एक - दू व्यक्तिक आर प्रतीक्षा अछि।

तावत् सुनीता आ कमला सेहो आबि गेलीह। सब केओ गाड़ी मे बैसि होटल पहुँचलाह। ओहिठाम सुनीता मैनेजर सँ पूछलक जे कार्मिक पदाधिकारी जे कमरा करीब सात बजे बुक करौने छथि, ओकर नम्बर कतेक अछि।

पहिने तँ मैनेजर नम्बर कहबा मे आना - कानी केलक मुदा सुनीता बजलीह जे ओ हमरा एहिठाम बजौने छथि। हमरा हुनका सँ जरूरी काज अछि। मैनेजर सुनीताक झांसा मे आबि गेल। ओकरा भेलैक जे भ सकैत अछि जे इहो हुनका लोकनिक शिकार हो। किएक तँ ओहि होटल मे प्रायः अही सभक लेल बुकिंग होइत छल। मैनेजर सुनीता के कमरा नम्बर कहि देलक। सुनीता सब के लऽक कमराक बाहर ठाढ़ भ गेलीह आ केबाड़ पर खट - खट चोट करए लगलीह। एम्हर इ सब तैयारे भ रहल छल कि केबाड़ पर खट - खट केर आबाज भेल। आबाज सुनि क सुजाता के जान मे जान आयल। ओ अपना योजना मे सफल भ रहल छलीह। ओ भीतरे - भीतर अत्यन्त खुश भेलीह।

कार्मिक पदाधिकारी - एखन के आबि सकैत अछि?

नेता जी - भ सकैत अछि जे होटलक कोनो कर्मचारी होमए।

कार्मिक पदाधिकारी - जाऽ क देखू तँ।

नेताजी जाऽ क केबाड़ खोललन्हि। बाहर मे कलाबतीक संग टूटा स्त्री आ एकटा पुरूष के देखि हतप्रभ भ गेलाह। नेता जी किछु करितथि, ओहि सँ पहिने राब केओ भीतर घुसि गेलाह।

कार्मिक पदाधिकारी, मुख्य-कार्मिक पदाधिकारीक संग कमला के देखि क लाजे कठौत भ गेलाह । कमला जे का बहुत गंञ्जन आ फञ्जहति केलन्हि। कमला बजलीह - इएह अहाँक औफीसक काज चलि रहल अछि। हम पूछैत छलहु तँ कहैत छलहु जे आफीसक काज मे देरी भ जाइत अछि। आई बुझलहु जे अहॉ सब कोन आफीसक काज क रहल छी। सुनीता बाजल तँ हमरा विश्वास नञि भेल। हम की जनलहु जे आफीसक बहाने कोन - कोन काज होइत अछि। जँ सुनीता नञि बाजैत तँ हम त किछु बुझबो नञि करितहु।

मुख्य कार्मिक पदाधिकारी के कोनो गवाह आ बयान क आवश्यकता नञि रहि गेल छल। ओ स्वयं अपना ऑखि सँ सब लीला देखि नेने छलाह। ओ सब गोटे के प्रातः काल आठ बजे आफीस मे बजौलन्हि आ अपने सुजाताक संग ओकरा गाम पर चल गेलाह।

सुजाताक संगे बड़ा साहेब के देखि उमाकान्त का सुजाताक माँ आश्चर्य मे पड़ि गेलीह। तखन सुजाता परिचय करौलन्हि जे इ हमर पटना बला बाबू जी छथि, जिनका ओहिठाम हम पन्द्रह दिन - पूर्व गेल रही। हिनकहि मदति सँ पूरा औफीसक माफियाक भण्डाफोर कएल अछि।

बड़ा साहेब - उमा बाबू, हमर बेटी बड़ होशियार अछि। इ जाहि तरहे एतेक पैघ खतरा उठा क एहिठामक बदचलन

अधिकरी आ कर्मचारीक कुकर्मक भंडाफोर कएलक अछि हम तँ सोचिओ नञि सकैत छी।

उमाकान्त - बेटीओ तँ अहींक थीक!

बड़ा साहेब - नञि, नञि, इ सब अहॉ लोकनिक - संस्कारक फल थीक। एतेक साहस जँ सब स्त्री करथि तँ धरती पर सँ दुष्कर्म उठि जायत।

राति मे सब केओ एकेठाम बैसि भोजन कएलन्हि। बड़ा साहेब भोजनक खूब प्रसंसा केलन्हि।

उमाकान्त - श्रीमान्, अपने एतेक पैघ हाकिम आ हम सब गरीब लोक अहॉक स्वागत की क सकब।

बड़ा साहेब - एखन तँ हम अपना बेटीक ओहिठाम आयल छी आ बेटीक ओहिठाम केओ मान-सम्मान देखैत अछि? एकर मेम साहेब सेहो एबाक लेल जिद्य करैत छलीह।

उमाकान्त - हुनकहु किएक ने आनल। बड़ नीक रहैत!

बड़ा साहेब - एखन एहिठामक परिवेश ठीक नञि छल तँ फेर कहिओ।

प्रातः काल आठ बजे बड़ा साहेब जलखै कऽक सुजाताक संग आफीस गेलाह। सुजाताक फाइल तँ रातिमे मे लऽ नेने छलाह। ओहिठाम आफीसक सब कर्मचारी आबि गेल छल। कलाबती, सुनीता आ कमला सेहो आबि गेल छलीह। बड़ा

साहेब सब सँ पहिने सुजाता आ सुनीता केर नियुक्ति केलन्हि। ओकर बाद कार्मिक पदाधिकारी आ नेताजी के मुअत्तल करैत सब कर्मचारी के बदली क देलन्हि। केवल ध ीरेन्द्र आ कलाबती पर कोनहु कारबाई नञि भेल, बल्कि हुनका दूनू के प्रसंसा कएलन्हि। धीरेन्द्र के तत्काल वरीय होएबाक कारणे कार्मिक पदाधिकरीक कार्यभार देल गेल। कार्मिक पदाधिकरी के मुअत्तल सँ कमला ओतहि कानए - बाजए लगलीह आ बड़ा साहेब के आरजू मिन्नत करए लगलीह

सुजाता बजलीह - बाबू जी हम किछु बाजए चाहैत छी।

बड़ा साहेब- बाजू, की बाजए चाहैत छी।

सुजाता - एहि चंडाल चौखरीक नेता तँ ई नेता अछि।

इ एक नम्बर के पाजी लोक अछि। ओकरा अपने उचित सजा देल अछि। ओकरा संगे सब कर्मचारी हँ मे हँ मिलबैत रहए आ सब मिलिकए बंदर - बॉट करैत छल। ते ओकरहु बदली ठीके अछि, मुदा कार्मिक पदाधिकारीक सजा किछु वेशी भऽ गेल। ओ एहि चौखरी मे शामिल अवश्य छलाह। परन्तु इ हुनकर लाचारी छल। हुनका विरोध कएला पर नेता तरह - तरह के शिकायत उपर सँ निचॉ धरि करैत छल आ कार्यालय मे हड़ताल क धमकी दैत छल आ इ ओकरा सोझां विवश भ जाइत छलाह। तखन अधिकारी होइत एतेक डेरबुक नञि होएबाक चाही। ते दोषी तँ ओहो छथिये मुदा सजा बहुत पैघ छन्हि। एहि पर विचार कएल जाऊ।

सुजाताक बाक पटुताआ चतुराई सँ बड़ा साहेब प्रसन्न छलाह। ओ कार्मिक पदाधिकारीक मुअत्तल आदेश आपस लैत बदली क देलन्हि। बड़ा साहेब केर एहि निर्णय पर कमला सेहो खुश छलीह। ओ बड़ा साहेब केर संग सुजाता के सेहो धन्यवाद देलन्हि।

लेखक-परिचय

नाम :- नंद कुमार मिश्र

जन्म :-2 जनवरी 1950

जन्म स्थान :- भैरव बलिया (मातृक)

ग्राम एवं पत्रालय : उफरदाहा

थाना-बहेड़ा

जिला-दरभंगा

पिता :- श्री बैद्यनाथ मिश्र

सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण

माय :- स्व. श्रीमती गोसाउन देवी

करुणामयि, सहृदया, धर्मपरायणा

शिक्षा-स्नातक, कला, संगीत प्रभाकर

वृत्ति- लेखापाल विद्युत अंचल, भागलपुर

रूचि : शास्त्रीय एवं लोकगायन, कथा एवं कविता लेखन सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य रचना प्रमुख अछि।

प्रकाशित पोथी :- विधात्री (कविता संग्रह) 25.4.04

गाम-घर (कथा संग्रह) 26.12.2004